संस्कार कांवड़ यात्रा, गुप्तेश्वर महादेव की शाही सवारी आज

आज श्रावण के दूसरे सोमवार पर शहर में दो बड़े आयोजन

जबलपुर। आज श्रावण के दूसरे सोमवार का 21 जुलाई को शहर की धर्मधानी की संज्ञा परिभाषित होगी। एक तरफ गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड से सम्मानित विश्व की सबसे बड़ी ऐतिहासिक संस्कारधानी की संस्कार कांवड़ यात्रा सुबह 7 बजे से माँ नर्मदा तट गौरीघाट से कैलाशधाम खमरिया की ओर रवाना होगी तो दूसरी तरफ संस्कारधानी में महाकाल की तर्ज पर गुप्तेश्वर महादेव की शाही सवारी यात्रा सुबह 10 बजे भक्तों को आशीर्वाद देने नगर भ्रमण पर निकलेगी।

श्रीनरसिंह-श्रृंगार

जबलपुर। श्रीगुप्तेश्वर महादेव मंदिर में दर्शन के लिए बड़ी संख्या में भक्त गण उमड़ रहे है।

नर्मदा जल लेकर निकलेंगे 1 लाख कावड़िए

संस्कार कांवड़ यात्रा समिति के आयोजक शिव यादव, नीलेश रावल, सहित अन्य सदस्यों ने बताया कि 15 वें वर्ष में यह कांवड़ यात्रा प्रवेश कर रही है। आयोजकों ने बताया कि यात्रा गौरीघाट में माँ नर्मदा का पूजन कर प्रारंभ होगी, लगभग 1 लाख कावड़िए नर्मदा जल लेकर शिवजी का अभिषेक करने रवाना होंगे। यह यात्रा गौरीघाट से रेतनाका, रामपुर चौक, सराफा बाजार से गलगला, बेलबाग, घमापुर चौक, कांचघर चौक, गोकलपुर, रांझी, खमरिया चौक से कैलाश धाम में संपन्न होगी। जहाँ काँवड़िए 35 किलोमीटर चल कर महादेव का जल अभिषेक करेंगे।

संत समाज करेगा शाही यात्रा की अगुवाई

गुप्तेश्वर पीठाधीश्वर डॉ. स्वामी मुकुंद दास महाराज, मार्गदर्शक डॉ. स्वामी नृसिंहदास महाराज, शाही सवारी के संयोजक पं. द्वारिका प्रसाद मिश्रा, पं. पंकज पाण्डे आदि ने बताया कि शाही यात्रा उज्जैन के महाकाल भगवान की तरह अपने गर्भगृहसे निकल कर 21 जुलाई की सुबह 10 बजे गुप्तेश्वर महादेव मंदिर से प्रारंभ होकर शक्ति नगर चौक, कृपाल चौक, हाथीताल, हितकारिणी स्कूल, अनगढ़ महावीर मंदिर, आदिशंकराचार्य चौक (छोटी लाइन), शास्त्री ब्रिज, बस स्टैंड, गंजीपुरा, फुहारा से होते हुए मिलौनीगंज रामलीला मैदान में यात्रा का समापन होगा। आयोजकों ने बताया कि शाही यात्रा की अगुवाई डॉ. स्वामी नृसिंहदास, महामण्डलेश्वर स्वामी अखिलेश्वरानंद गिरी, दण्डीस्वामी कालीकानंद महाराज, स्वामी पगलानंद, डॉ. स्वामी राधे चैतन्य, साध्वी ज्ञानेश्वरी दीदी, स्वामी राजारामाचार्य, स्वामी रामजी शरण, स्वामी चैतन्यानंद सहित अनेक महात्मागण शामिल होंगे। आयोजक मंदिर परिवार के दिलीप अग्रवाल, प्रशांत मिश्रा, पिंकी अग्रवाल, शेखर सराफ, एडवोकेट राजेश तिवारी, ऋषभ अग्रवाल, हरीश सचदेवा, प्रभात मिश्रा, उत्कर्ष रावत, आदि ने शहरवासियों से शाही सवारी यात्रा में दर्शन पूजन कर पुण्य लाभ लेने की अपील की हैं।

शिव मंदिरों में भीड़ को लेकर अतिरिक्त प्रबंध

कांवड़ यात्रा के अलावा सावन सोमवार के अवसर पर शहर के प्रमुख शिव मंदिरों में सुबह से देर रात तक भारी भीड़ उमड़ने की संभावना है। इसको ध्यान में रखते हुए मंदिर परिसरों में भी सुरक्षा बल तैनात रहेंगे। महिला और पुरुष श्रद्धालुओं के लिए अलग-अलग लाइनें और व्यवस्था की गई है, जिससे दर्शन व्यवस्था व्यवस्थित ढंग से संचालित हो सके।

संस्कार कांवड़ यात्रा एवं शाही सवारी का होगा स्वागत

आज शहर में निकाली जाने वाली संस्कार कांवड़ यात्रा का भूरामल धर्मशाला गंजीपुरा में कांग्रेस द्वारा मंच लगाकर कावड़ियों का और श्रृध्दालुओं को स्वागत किया जाएगा. कांग्रेस नेता मनोज नामदेव के संयोजन में यहां पर स्वागत मंच लगाया जा रहा है. इस अवसर पर पूर्व पार्षद अभिषेक यादव, विवेक यादव, मनोज नामदेव ने सभी कांग्रेस जनों से उपस्थिति की अपील की है।

कांवड़ यात्रा को लेकर प्रशासन अलर्ट

सावन माह के दूसरे सोमवार को निकलने वाली संस्कार कांवड़ यात्रा को लेकर जिला प्रशासन ने तैयारियां पूरी कर ली हैं। संस्कार कांवड़ यात्रा सोमवार आज सुबह 7 बजे मां नर्मदा तट गौरीघाट से प्रारंभ होगी। यात्रा बादशाह हलवाई मंदिर, रामपुर चौक, छोटी लाइन फाटक, शास्त्री ब्रिज, तीन पत्ती चौक, मालवीय चौक, बड़ा फुहारा, सराफा चौक, बेलबाग तिराहा, घमापुर चौक, कांचघर चौक, सतपुला ब्रिज, पनेहरा पेट्रोल पंप, गोकलपुर, रांझी, खमरिया बाजार होते हुए मटामर स्थित कैलाशधाम मंदिर पहुंचेगी।

यात्रा मार्ग पर सुरक्षा के कड़े इंतजाम

गौरीघाट से मटामर तक के निर्धारित रूट और अन्य संपर्क मार्गों पर पुलिस बल की तैनाती की गई है। कांवड़ शिविरों और प्रमुख चौराहों पर पुलिसकर्मी तैनात रहेंगे, वहीं सादे कपड़ों में भी जवान निगरानी रखेंगे ताकि किसी तरह की गड़बड़ी रोकी जा सके। यात्रा मार्ग पर ट्रैफिक व्यवस्था को नियंत्रित करने के लिए ट्रैफिक पुलिस की तैनाती की गई है, और जरूरत पड़ने पर रूट डायवर्जन भी लागू किया जाएगा।

सुरक्षा और ट्रैफिक व्यवस्था चाक-चौबंद

एम्बुलेंस, दमकल और क्रेन रहेंगे तैनात

यात्रा के दौरान किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिए प्रमुख बिंदुओं पर एंबुलेंस, दमकल और क्रेन वाहन तैनात किए जाएंगे। तीनों ट्रैफिक थानों सहित संबंधित थाना क्षेत्रों की पुलिस फोर्स को फील्ड में सक्रिय रखा गया है। साथ ही अतिरिक्त बल भी रूट पर तैनात रहेगा ताकि किसी भी स्थिति से तत्काल निपटा जा सके।

शिविर आयोजकों के लिए दिशा-निर्देश

प्रशासन ने कांवड़ शिविर आयोजकों को स्पष्ट निर्देश दिए हैं कि वे अपने शिविर मुख्य राजमार्गों से कम से कम 100 फीट और आंतरिक सड़कों से 50 फीट की दूरी पर स्थापित करें। लाउडस्पीकर का उपयोग धीमी आवाज में किया जाए ताकि स्थानीय लोगों को असुविधा न हो। शिविर संचालन में सामाजिक समरसता और शांति बनाए रखने पर विशेष जोर दिया गया है।

मैदान में अधिकारी

श्रद्धालुओं की सुरक्षा और यात्रा को सुगम बनाने के उद्देश्य से कलेक्टर दीपक सक्सेना और एसपी सम्पत उपाध्याय ने कांवड़ यात्रा रूट और मटामर क्षेत्र का निरीक्षण किया। उन्होंने खमरिया और मटामर से लौटते समय होने वाली भीड़ की संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए व्यवस्था को लेकर आवश्यक दिशा-निर्देश भी जारी किए हैं।

श्रद्धालुओं से प्रशासन की अपील

प्रशासन ने श्रद्धालुओं से अपील की है कि वे यात्रा के निर्धारित मार्ग का ही पालन करें, नियमों का पालन करें और सुरक्षा व्यवस्था में सहयोग करें। यह यात्रा श्रद्धा, संयम और अनुशासन का प्रतीक है, इसलिए इसे शांतिपूर्ण और सौहार्दपूर्ण ढंग से संपन्न कराने में सभी की सहभागिता आवश्यक है।

बारिश थमीं दिन और रात का पारा उछला

जबलपुर। दो दिन से बारिश थमने के बाद पारे में अचानक उछाल आ गई है. इससे गर्मी और उमस बढ गई है. साथ ही पारे में उछाल आ गया है. रविवार को आसमान पर हलके बादल छाए रहे. बीच बीच में धूप भी निकली, लेकिन बारिश नहीं हुई. मौसम खुलते ही पारे में उछाल आ गया और दिन का तापमान औसत से 4 डिग्री ऊपर चला गया। रात में जरूर ठण्डी हवायें चलीं। मौसम विभाग का कहना है कि मानसूनी सिस्टम कमजोर पड़ गया है। इन दिनों मानसून उत्तर प्रदेश और पंजाब तरफ सक्रिय है। बंगाल की खाड़ी से उठी टर्फ लाईन पंजाब की तरफ सक्रिय है। अगले 1 हफ्ते बाद मध्य प्रदेश में मानसून फिर सक्रिय होगा उसके बाद बारिश होगी, तब तक छुट-पुट वर्षा का दौर जारी रहेगा। स्थानीय मौसम विज्ञान केन्द्र से प्राप्त जानकारी के अनुसार उड़ीसा से आए मानसूनी बादल अभी पूर्वी मध्यप्रदेश के ऊपर छाए हुए थे जो अब पश्चिमी दिशा की ओर शिफ्ट हो गये। पिछले 24 घंटों के दौरान नगर का अधिकतम तापमान 33.2 डिग्री सेल्सियस जो सामान्य से 4 डिग्री अधिक दर्ज किया गया।

जांच दल ने सहायक आबकारी आयुक्त के बयान दर्ज किए

जबलपुर। जिले के सहायक आयुक्त आबकारी संजीव दुबे पर मारपीट और अवैध वसूली के गंभीर आरोपों के बाद प्रदेश स्तर पर हलचल मच गई है। शराब ठेकेदारी संभाल रही जाग्रति इंटरप्राइजेज के संचालक अजयसिंह बघेल द्वारा की गई शिकायत के आधार पर जांच शुरू हुई है, जिसमें उन्होंने सहायक आयुक्त पर अपने कर्मचारियों से मारपीट और अवैध वसूली के लिए दबाव डालने के गंभीर आरोप लगाए हैं। प्रदेश आबकारी आयुक्त अभिजीत अग्रवाल के निर्देश पर जबलपुर पहुंचे अपर आयुक्त आबकारी मुकेश नेमा ने रविवार को इस मामले की जांच के तहत सहायक आयुक्त संजीव दुबे सहित संबंधित कर्मचारियों के बयान दर्ज किए। बताया गया है कि कलेक्टर कार्यालय के सभाकक्ष में यह कार्रवाई की गई, जिसमें दुकान के कर्मचारी उपेंद्र मिश्रा और सहायक आयुक्त से अलग-अलग बातचीत की गई। हालांकि, विभाग की ओर से अभी तक किसी भी प्रकार की आधिकारिक पुष्टि नहीं की गई है कि किन-किन बिंदुओं पर पूछताछ की गई या क्या बयान दर्ज हुए। मामले की संवेदनशीलता और हाई-प्रोफाइल प्रकृति को देखते हुए आबकारी विभाग ने फिलहाल गोपनीयता बनाए रखी है।मामले में जांच के दौरान न सिर्फ मीडिया बल्कि स्थानीय कर्मचारी और अधिकारी भी हाशिये पर नजर आए। कहा यहां तक जा रहा है की कलेक्टर दीपक सक्सेना ने भी सहायक आयुक्त से उनका पक्ष जानने का प्रयास किया, लेकिन संजीव दुबे किसी का भी कॉल रिसीव नहीं कर रहे हैं। यही स्थिति जांच कर रहे अपर आयुक्त मुकेश नेमा की भी है, जो फिलहाल मीडिया से दूरी बनाए हुए हैं। गौरतलब है कि यह पूरा प्रकरण ऐसे समय पर उजागर हुआ है जब प्रदेश के आबकारी मंत्री जगदीश देवड़ा स्वयं प्रदेश के उपमुख्यमंत्री भी हैं और जबलपुर जिले के प्रभारी मंत्री भी हैं। इसके बावजूद जिले में आबकारी विभाग के भीतर इस तरह का विवाद सामने आना विभागीय संचालन और अनुशासन पर गंभीर प्रश्न खड़े करता है।फिलहाल, इस मामले को लेकर पूरे आबकारी विभाग में खामोशी छाई हुई है। अधीनस्थ अधिकारी और कर्मचारी भी कुछ भी कहने से बच रहे हैं।

शराब दुकान कर्मचारियों के साथ मारपीट मामले में आरोपी की जांच जारी

शहर में मोबाईल लूट की वारदातें बढ़ी

जबलपुर। शहर में मोबाईल लुटेरे तेजी से सक्रिय हैं, हर दिन किसी न किसी थाना क्षेत्र में मोबाईल पर बात करते लोगों के मोबाईल लूटे जा रहे हैं. कुछ एफआईआर दर्ज हो रही हैं और कुछ मोबाईल गुमशुदगी में तब्दील हो रही हैं. ताकी लूट के आंकड़ों को कम किया जा सके. कल फिर सिविल लाईन थाना क्षेत्र में आरपीएफ के बाबू का मोबाईल वंदन बारात घर के पास बिना नम्बर की बाईक में सवार तीन लड़के लूट कर भाग गये. सिविल लाईन पुलिस थाने से प्राप्त जानकारी के अनुसार जीएस कालेज के समीप रहने वाले आरपीएफ में पदस्थ अपर लिपिक आरिफ अली सवा 10 बजे अपने साथी असद खान के घर पैदल मोबाइल पर बात करते हुये जा रहे थे. इस दौरान रास्ते में इलाहाबाद बैंक के समीप स्थित बंधन बारात घर के पास बिना नम्बर की मोटर सायकल में आए तीन लड़के झपट्टा मारकर उनके पास से मोबाईल छीन कर ले गये. पुलिस ने रिपोर्ट पर धारा 304 बीएनएस का अपराध पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया है।

राष्ट्रीय स्तर पर होंगे यूथ फेस्टिवल: संजय मेहता

इंस्टिट्यूशन आफ इंजीनियर्सलोकल सेंटर जबलपुर की 349वीं बैठक सम्पन्न

जबलपुर। द इंस्टीट्यूशन ऑफ इंजीनियर्स (इंडिया), जबलपुर लोकल सेंटर की 349वीं कार्यकारी समिति की बैठक चेयरमैन इंजी. संजय मेहता की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में निर्णय लिया गया कि संस्था प्रति वर्ष राष्ट्रीय स्तर पर यूथ फेस्टिवल का आयोजन करेगी। इंजी. मेहता ने बताया कि यह आयोजन तकनीकी विद्यार्थियों को नवाचार, खेल और सांस्कृतिक गतिविधियों के समन्वय से समग्र विकास का मंच प्रदान करेगा। तकनीकी सत्रों के साथ-साथ नृत्य, संगीत, नाटक और खेलकूद जैसी विविध गतिविधियाँ भी आयोजित की जाएंगी। सभी वर्गों में विजेताओं को सम्मानित किया जाएगा। बैठक में संस्था की आगामी गतिविधियों और विकास योजनाओं पर भी चर्चा की गई। बैठक में डॉ. राजीव जैन (मानसेवी सचिव), इंजी. राकेश राठौर (कौंसिल मेंबर), इंजी. प्रकाश चंद्र दुबे (पूर्व अध्यक्ष), इंजी. जय प्रकाश पराशर, इंजी. सुरेंद्र सिंह पंवार, डॉ. संजय कुमार वर्मा, इंजी. राजेश सिंह ठाकुर, इंजी. हितेश तिवारी, इंजी. राकेश जैन, इंजी. दीक्षा मेहता, इंजी. लक्ष्मण दास, इंजी. सुधीर शर्मा, इंजी. तरुण आनंद, इंजी. मनीष बाजपेई एवं इंजी. मनीष कटारे उपस्थित रहे।

सर्व समाज हर दिन लगाएं एक पौधा: संदीप जैन

नगर परिषद भेड़ाघाट के सहयोग से किया एक पेड़ माँ के नाम का आयोजन

हरिभूमि, जबलपुर। देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के एक पेड़ मां के नाम अभियान का अब सर्वसमाज पर असर देखने मिल रहा है जहां पर हर समाज वर्ग के लोग एक पौधा मां के नाम लगा रहे है इसी कड़ी में नर्मदा किनारे भाजपा के समरसता सेवा संगठन द्वारा सर्व समाज की सहभागिता से पिछले साल की तरह इस साल भी हरियाली अमावस्या के अवसर पर घुघरा वॉटर फॉल लम्हेटा घाट में वृहद रूप से पौधारोपण किया गया नगर परिषद भेड़ाघाट के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम में लोक निर्माण मंत्री राकेश सिँह ने एक पौधा लगा कर सभी लोगो को पौधे लगाने का आग्रह किया जिसके बाद बरगी विधायक नीरज सिंह, भेड़ाघाट अध्यक्ष चतुर सिंह लोधी उपाध्यक्ष जगदीश दाहिया सहित भेड़ाघाट के सभी जनप्रतिनिधियों ने एक पौधा रोपा इस दौरान भाजपा के समरसता सेवा संगठन के अध्यक्ष संदीप जैन ने बताया की समरसता के भाव को निहित रखते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आह्वान 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान को समर्पित करते हुए वृहद स्तर पर पौधारोपण कार्यक्रम संगठन द्वारा पिछले साल की तरह ही किया गया है और हम पौधारोपण करने के साथ ही उनका संरक्षण और संवर्धन भी हो सके इस के लिए भी संगठन ने तैयारी की है और चयनित स्थल में पौधे रोपित करने के बाद उनकी देखभाल और सुरक्षा सहित अन्य आवश्यक व्यवस्थायें भी की गई है।

ये रहे मौजूद

नगर परिषद भेड़ाघाट के सहयोग से आयोजित किये गए पौधा रोपण के इस कार्यक्रम में अध्यक्ष चतुर सिंह लोधी-उपाध्यक्ष जगदीश दाहिया, विधायक प्रतिनिधि ओमनारायण दुबे, पूर्व अध्यक्ष सुनील जैन, दिलीप राय, पूर्व उपाध्यक्ष किशोर दुबे,विक्रम सिंह झारिया, निधि परोहा, लक्ष्मीनारायण दुबे, धर्मेंद्र पुरी, पार्षद महेश तिवारी, मनीष शुक्ला, आशीष जैन, राजकुमार पटेल आदि मौजूद रहे।

ग्वारीघाट में कार की चपेट में आई गाय की मौत

सड़कों से नहीं हट रहा मवेशियों का डेरा!

जबलपुर।

शहर में गौवंश के सड़कों पर कब्जा होने से एक तरफ जहां गौवंश चोटिल हो रहा है, वहीं दूसरी ओर वाहन भी दुर्घटना ग्रस्त हो रहे हैं. कहीं मूक पशु मारे जा रहे हैं, कहीं मानवता के खून से सड़के रंग रही हैं. तो कहीं इस बीच कर्तव्यों की इतिश्री सिर्फ कागजों पर की जा रही है. इन हालातों के लिये जितना पशुपालक जिम्मेदार हैं, उतना ही नगर निगम प्रशासन और आमनागरिक भी जिम्मेदार है. नगर निगम ने विधानसभा वार आवारा मवेशियों की धड़पकड़ करने और पशु पालकों पर जुर्माना लगाने की डयूटी लगाते हुये अधिकारियों के नम्बर में सार्वजनिक किये है. जिम्मेदार काम नहीं कर रहे, आम लोग सूचना नहीं दे रहे, पशुपालक बेपरवाह हैं. जिससे आए दिन घटनाएं हो रही हैं. रविवार की सुबह ग्वारीघाट मार्ग पर गणेश मंदिर के सामने एक कार चालक की चपेट में आई गाय की मौत हो गई. जिसके बाद कानून व्यवस्था की स्थिति पैदा हो गई. लोगों ने ड्रायवर की जमकर धुनाई की. प्राप्त जानकारी के अनुसार ग्वारीघाट गणेश मंदिर के पास रविवार तड़के पांच बजे एक कार चालक की कार के नीचे बीच सड़क में बैठी गाय कार की चपेट में आ गई. जिससे गाय की मौत हो गई. कार एक ट्रैवल एजेंसी की बताई जा रही है. जिसका नम्बर एमपी 20 जीए 0568 बताया गया है. जिसे मनोज कुशवाहा नाम का ड्रायवर चला रहा था. इस घटना के बाद स्थानीय लोगों ने ग्वारीघाट पुलिस को सूचना दी. पुलिस द्वारा कार्यवाही में हीला हवाली बरती गई. वहीं स्थानीय लोगों ने मिलकर कर को चारों तरफ से उठाकर गौ माता को बाहर निकला।

गौशाला माफिया खा रहा है अनुदान

समाजवादी पार्टी के प्रदेश महासचिव आशीष कुमार मिश्रा ने आरोप लगाया है की शहर में अनेक गौशालाएं संचालित हैं और सरकार अनुदान भी दे रही है, उसके बाद भी गौवंश की रक्षा नहीं हो पा रही है. लगातार सड़कों पर गोवंश दुर्घटना के चलते दर्दनाक मृत्यु का शिकार हो रही है इसका दोषी कौन है. सरकार, जिला प्रशासन, नगर निगम या गऊ पालक देखने में आया है की सड़क पर आए दिन गोवंश दुर्घटना का शिकार हो रही है इस ओर किसी का कोई भी ध्यान नहीं है जहां पूरे जिले में अनेक गौशाला सरकार के द्वारा अनुदान के माध्यम से चल रही है फिर भी जिले में गोवंश निराश्रित होकर सड़कों पर भटक रही है और अनुदान की राशि गौशाला माफिया खा रहे हैं।

सपा ने लगाए प्रशासन पर गंभीर आरोप...

समाजवादी पार्टी प्रदेश सचिव आशीष मिश्रा ने प्रशासन पर गंभीर आरोप लगाते हुए कहा है कि गौवंश के संरक्षण और संवर्धन के लिये सरकार गंभीर है और योजनाएं चला रही है. फिर भी जिला और नगर निगम प्रशासन द्वारा लगातार घोर लापरवाही बरती जा रही है. शहर के व्यस्ततम इलाके में चौबीसों घंटे पालतू और निराश्रित मूक पशू सड़कों पर डेरा जमाए रहते हैं. उन्होंने चेतावनी दी है की जिला प्रशासन ने ध्यान नहीं दिया तो आने वाले समय में उग्र आंदोलन किया जाएगा क्योंकि यह कोई राजनीतिक मुद्दा नहीं है।

तीस की उम्र में ही क्यों बढ़ रहा हार्ट अटैक का खतरा?

दिल की बीमारियों के दो बड़े कारण हैं, हाइपरटेंशन और डिस्लिपिडेमिया: डॉ. पुष्पराज पटेल

जबलपुर। डिस्लिपिडेमिया एक दीर्घकालिक बीमारी है, जिसमें खून में वसा या लिपिड्स का स्तर सामान्य से अधिक हो जाता है। लिपिड्स तीन प्रकार के होते हैं — एलडीएल या लो-डेंसिटी लिपोप्रोटीन, एचडीएल या हाई-डेंसिटी लिपोप्रोटीन या गुड कोलेस्ट्रॉल और ट्राइग्लिसराइड्स। हाल ही में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद द्वारा की गई एक क्रॉस-सेक्शनल स्टडी(ICMR-IN DIAB) में पाया गया कि 20 वर्ष और उससे अधिक उम्र के लोगों में डिस्लिपिडेमिया का प्रसार 81.2% था।

यह सर्वे शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों से चुने गए 1,13,043 प्रतिभागियों पर किया गया था, जिनमें से 79,506 ग्रामीण और 33,537 शहरी क्षेत्र से थे। वहीं, राष्ट्रीय पारिवारिक स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अनुसार, देशभर में 1.7 करोड़ लोगों को शामिल करने वाले इस अध्ययन में 28.1% प्रतिभागियों में हाई ब्लड प्रेशर पाया गया। ये आंकड़े बेहद चिंताजनक हैं और दर्शाते हैं कि डिस्लिपिडेमिया और हाइपरटेंशन दोनों बीमारियां देश में चुपचाप और तेजी से बढ़ रही हैं। इन दोनों स्थितियों के आपसी संबंध पर बात करते हुए 'गोल्डन हार्ट' के सीनियर इंटरवेंशनल कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. पुष्पराज पटेल ने कहा, "हाइपरटेंशन और डिस्लिपिडेमिया एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। अगर किसी को इनमें से एक भी बीमारी है और समय पर ध्यान न दिया जाए, तो दूसरी बीमारी भी धीरे-धीरे विकसित हो सकती है। रिसर्च से साबित हुआ है कि हाई ब्लड प्रेशर, डिस्लिपिडेमिया से जुड़ी एक आम सह-रोग स्थिति (कॉमॉर्बिडिटी) है, और ये दोनों ही हृदय रोगों के बड़े जोखिम कारक माने जाते हैं।

डिस्लिपिडेमिया और हाइपरटेंशन

दोनों बीमारियों के पीछे एक समान कारण है: जीवनशैली। जैसे-जैसे हम एक अत्यधिक शहरी जीवनशैली की ओर बढ़ रहे हैं, हमारी दिनचर्या दो दुनियाओं के बीच फंसी रह गई है। हम अब भी ऐसा खाना खा रहे हैं जो शक्कर से भरपूर और ट्रांस फैट युक्त है, लेकिन हमारे पास इतना समय नहीं है कि हम एक्सरसाइज कर सकें या खाने की आदतों को संतुलित कर पाएं। यही असंतुलन आगे चलकर लंबी अवधि की स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बनता है। डिस्लिपिडेमिया को समझने के लिए सबसे पहले यह जानना जरूरी है कि लिपिड्स या लिपोप्रोटीन हमारे शरीर में क्या करते हैं। एलडीएल को 'बैड' कोलेस्ट्रॉल माना जाता है क्योंकि यह हमारी धमनियों में कोलेस्ट्रॉल जमा करता है, जिससे प्लाक बन सकता है और आगे चलकर ब्लॉकेज, हार्ट अटैक या स्ट्रोक हो सकता है। एचडीएल शरीर के लिए 'गुड' माना जाता है क्योंकि यह शरीर के अन्य हिस्सों से कोलेस्ट्रॉल को लिवर तक ले जाता है, जहां यह बाहर निकाल दिया जाता है। ट्राइग्लिसराइड्स भी हानिकारक होते हैं। इनका स्तर ज्यादा होने पर धमनियां कठोर या मोटी हो सकती हैं, जिससे स्ट्रोक, हार्ट अटैक और पैंक्रियाटाइटिस (पैंक्रियास की सूजन) का खतरा बढ़ जाता है। डिस्लिपिडेमिया की जांच में शरीर में तीन तरह की वसा (फैट) को देखा जाता है: अगर एलडीएल 100 mg/dl से ज्यादा हो, ट्राइग्लिसराइड्स 150 mg/dl से ज्यादा हो और एचडीएल पुरुषों में 40 से कम या महिलाओं में 50 से कम हो, तो इसका मतलब है कि शरीर में कोलेस्ट्रॉल बढ़ा हुआ है और उसे कंट्रोल करना जरूरी है। हाइपरटेंशन की पहचान दो तरीकों से होती है: या तो व्यक्ति को पहले से हाई बीपी की शिकायत हो या फिर जांच के समय ब्लड प्रेशर 140/90 mm Hg या उससे ज्यादा मापा जाए — तब इसे हाइपरटेंशन माना जाता है। इन दोनों स्थितियों के आपसी संबंध पर बात करते हुए 'गोल्डन हार्ट' के सीनियर इंटरवेंशनल कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. पुष्पराज पटेल ने कहा, "हाइपरटेंशन और डिस्लिपिडेमिया एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। अगर किसी को इनमें से एक भी बीमारी है और समय पर ध्यान न दिया जाए, तो दूसरी बीमारी भी धीरे-धीरे विकसित हो सकती है। रिसर्च से साबित हुआ है कि हाई ब्लड प्रेशर,

डिस्लिपिडेमिया से जुड़ी एक आम सह-रोग स्थिति (कॉमॉर्बिडिटी) है, और ये दोनों ही हृदय रोगों के बड़े जोखिम कारक माने जाते हैं। डिस्लिपिडेमिया यानी खून में वसा का असंतुलन, रक्त नलिकाओं की भीतरी परत को नुकसान पहुंचा सकता है, जिससे 'नाइट्रिक ऑक्साइड' का बनना कम हो जाता है — जो शरीर में ब्लड प्रेशर नियंत्रित करने में मदद करता है। इसके अलावा, यह शरीर की बारोरिफ्लेक्स प्रणाली की संवेदनशीलता को भी घटा सकता है, जिससे ब्लड प्रेशर का स्तर अस्थिर हो सकता है। डॉ. पटेल बताते हैं कि यह स्थिति बड़ी धमनियों को सख्त बनाकर उनके लचीलापन घटा सकती है, जिससे सिस्टोलिक (ऊपरी) ब्लड प्रेशर बढ़ने लगता है। व्यायाम की कमी और वसा युक्त भोजन की अधिकता से मोटापा और डिस्लिपिडेमिया दोनों का खतरा बढ़ता है। मोटापा, निष्क्रिय जीवनशैली और प्रोसेस्ड फूड पर निर्भरता ये सभी कारण इन दोनों बीमारियों में आमतौर पर पाए जाते हैं। इसलिए अगर ये समस्याएं युवावस्था में ही शुरू हो जाएं और समय रहते सुधार न हो, तो ये गंभीर हृदय रोगों की तरफ ले जा सकती हैं।"

डिस्लिपिडेमिया और हाइपरटेंशन जैसी दो पुरानी बीमारियों को लेकर अब खुलकर बात करने की जरूरत है, क्योंकि ये दिल की सेहत को धीरे-धीरे इस हद तक नुकसान पहुंचा सकती हैं कि उसे संभालना मुश्किल हो जाए। सबसे चिंताजनक बात यह है कि अब इन बीमारियों का असर कम उम्र के लोगों में भी दिखने लगा है। पहले जो बीमारियां 50-60 की उम्र में होती थीं, आज वे 30-35 की उम्र में ही दिख रही हैं। भारत में बढ़ते कोरोनरी हार्ट डिजीज के मामलों को रोकने के लिए ज़रूरी है कि इन बीमारियों के बेहतर प्रबंधन पर अभी से ध्यान दिया जाए। इसके लिए नीति स्तर पर भी ठोस फैसले लेने की ज़रूरत है — ताकि हमारा युवा वर्ग न सिर्फ लंबी उम्र तक जिए, बल्कि स्वस्थ और सक्रिय जीवन भी जी सके।

सावन शिवजी की आराधना का मास: तरुण चौबे

महारुद्र यज्ञ में उमड़ा भक्तों का सैलाब

सिहोरा। जय मातेश्वरी भक्त परिवार समिति द्वारा श्रावण मास के पावन अवसर पर पार्थिव शिवलिंग निर्माण महा रुद्राभिषेक एवं महारुद्र का सप्त दिवसीय आयोजन रांझी इंजीनियरिंग कालेज में गृहस्थ संत पंडित तरुण चौबे जी महाराज के सानिध्य में आयोजित किया जा रहा है जिसमें आज चौथे दिन भक्तों का जनसैलाब उमड़ पड़ा गृहस्थ संत पंडित चौबे जी ने कहा सावन शिव की आराधना का मास है मन को विकारों से विहीन करने और शिव आराधना में लगाने का श्रावण ही श्रेष्ठ समय है यह मास भगवान शिव को अति प्रिय है अगर जीवन को सत्यम शिवम सुंदरम बनाना चाहते हैं तो देवों के देव महादेव भगवान शिव के सानिध्य में बैठे उनकी उपासना करें उनके स्वरूप को जाने और गुणों को आत्मसात करें। व्यासपीठ का पूजन कर लिया आशीर्वाद, महारुद्राभिषेक के अवसर पर लोक निर्माण मंत्री राकेश सिंह मंत्री, विधायक अशोक रोहाणी विधायक अभिलाष पांडे,पूर्व विधायक सिहोरा दिलीप दुबे,पूर्व विधायक विनय सक्सेना,डॉ जितेन्द्र जामदार,पंकज दुबे,महेश राजपूत,दामोदर सोनी पार्षद, अभितेन्द्र दुबे सहित सैकड़ों भक्तों ने पार्थिव शिवलिंग का निर्माण एंव व्यासपीठ का पूजन किया। हर-हर महादेव के जयकारों से गूंजा पंडाल महारुद्र यज्ञ में जहां सुबह से पार्थिव शिवलिंग करने भक्तों का तांता लग जाता है वहीं हर हर महादेव के जयकारों से पंडाल गूंज उठता है। आयोजन में मनीष अग्रवाल,तेजल विश्वकर्मा, इशिता विश्वकर्मा, राजश्री,उमेश जौहरी,राजा सोनी दिनेश खबरिया ने शानदार भजनों की प्रस्तुति देकर सभी शिवभक्तों को मंत्र मुग्ध कर दिया।आयोजन को सफल बनाने में अनिल पाठक,रवि सोनी,शैलेंद्र दुबे,आशीष पांडे,विवेक शर्मा, दिनेश साहू, कैलाश अग्रवाल, अनुदीप त्रिपाठी, प्रतीक महावर, ट्विंकल, शैलेंद्र दीक्षित, मिकी सरदार, गोलू पांडे का सराहनीय योगदान रहा।

रायन इंटरनेशनल स्कूल शांति नगर के विद्यार्थियों ने किया पुलिस कंट्रोल रूम का शैक्षिक भ्रमण

जबलपुर। रायन इंटरनेशनल स्कूल शांति नगर के छात्रों को विशेष शैक्षिक भ्रमण के तहत नजदीकी पुलिस कंट्रोल रूम का अवलोकन कराया गया। इस गतिविधि का उद्देश्य छात्रों को भारत की कानून व्यवस्था, पुलिस प्रशासन की कार्यप्रणाली तथा नागरिक सुरक्षा के बारे में वास्तविक जानकारी देना था। इस अवसर पर पुलिस कंट्रोल रूम प्रभारी व अन्य पुलिस अधिकारियों ने बच्चों का स्वागत किया और उन्हें थाने के विभिन्न विभागों जैसे शिकायत कक्ष, नियंत्रण कक्ष, लॉकअप तथा फिर पंजीकरण प्रक्रिया के बारे में विस्तारपूर्वक बताया। छात्रों ने पुलिस अधिकारियों से कई प्रश्न पूछे जैसे -पुलिस कैसे अपराधों की जांच करती है? थाने मैं क्या-क्या कार्य होते हैं? इत्यादि इन सभी प्रश्नों का उत्तर सभी अधिकारियों ने

रोचक व ज्ञानवर्धक ढंग से दिया। पुलिस कंट्रोल रूम परिसर में सुरक्षा वाहनों जैसे पीसीआर वैन का भी प्रदर्शन किया गया, जिससे विद्यार्थियों में एक विशेष रुचि देखी गई। पुलिस विभाग ने बच्चों को सुरक्षा कानून का सम्मान, साइबर क्राइम से सतर्कता और जिम्मेदार नागरिक बनने के महत्व के बारे में भी जागरूक किया। साथ ही जागरूक नागरिक बनने की प्रेरणा दी गई। संपूर्ण भ्रमण हमारे शाला के अति सम्मानीय चेयरमेन डॉक्टर ए.एफ. पिन्टो एवं मैनेजिंग डायरेक्टर मैडम ग्रेस पिन्टो के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। उनका मानना है कि इस प्रकार की गतिविधियां विद्यार्थियों में सामाजिक जिम्मेदारी की भावना उत्पन्न करती हैं। ऐसा अनुभव बच्चों को पाठ्य पुस्तकों से नहीं मिलता यह भ्रमण उनकी दृष्टिकोण को व्यापक बनता है।

संकुल प्राचार्यों की उदासीनता के चलते लोकसेवक एरियर्स से वंचित

जबलपुर। मध्य प्रदेश जागरूक अधिकारी कर्मचारी संगठन के प्रदेश अध्यक्ष रॉबर्ट मार्टिन ने बताया कि संकुल प्राचार्यों एवं बाबुओं की मिलीभगत और उदासीनता के चलते जून और जुलाई में मिलने वाली एरियर्स की राशि आज दिनांक तक अप्राप्त है जिससे कर्मचारियों में रोष व्याप्त है, जबकि शासन के आदेशानुसार कर्मचारियों को समान किस्तों में मिलने वाले एरियर्स की प्रथम किस्त जून माह में मिलना थी, जो आज दिनांक तक अप्राप्त है। संगठन के प्रदेश अध्यक्ष रॉबर्ट मार्टिन, रऊफ खान, सुरेंद्र चौधरी, उमेश सिंह ठाकुर, सुनील झारिया, हेमंत ठाकरे, दिनेश गोंड, राकेश श्रीवास, संतोष चौरसिया, देवेंद्र भट आदि ने कलेक्टर से मांग की है कि सभी संकुल प्राचार्यों को सख्त हिदायत दी जाए की कर्मचारियों के एरियर्स बिल बनाकर अतिशीघ्र बीईओ कार्यालय भेजें।

नर्सिंग होम एवं चिकित्सकों को ब्लैकमेल करने वाले गिरोह के विरुद्ध आईएमए ने सौंपा ज्ञापन

जबलपुर। आईएमए ने पुलिस अधीक्षक को ज्ञापन सौंपकर नर्सिंग होम एवं चिकित्सकों को ब्लैकमेल करने वाले संगठित गिरोह के विरुद्ध शिकायत एवं आईएमए सदस्य डॉ. संजय मिश्रा को बदनाम करने वाले षड्यंत्रकारियों पर कड़ी कार्यवाही करने की गुहार लगाई है। बताया गया जबलपुर जिले के विभिन्न निजी अस्पतालों, क्लीनिकों एवं नर्सिंग होम्स को बीते कुछ महीनों से एक संगठित गिरोह द्वारा लगातार मानसिक रूप से परेशान किया जा रहा है। ये लोग स्वयं को कभी पत्रकार, कभी राजनीतिक कार्यकर्ता, तो कभी आरटीआई कार्यकर्ता बताकर अस्पतालों में जाकर धमकाते हैं, पैसों की मांग करते हैं और ना देने पर झूठी शिकायतें करने की धमकी देते हैं।

इस गिरोह में विशेष रूप से दो

व्यक्ति संलिप्त हैं- नरेन्द्र कुमार राकोशिया एवं आशीष मिश्रा, ये दोनों लोग बार-बार चिकित्सकीय संस्थाओं की प्रतिष्ठा को धूमिल करने का प्रयास कर रहे हैं। ये दोनों मिलकर अस्पतालों में अनाधिकृत रूप से घुसते हैं, कर्मचारियों से उलझते हैं, मोबाइल से वीडियो बनाते हैं और ब्लैकमेलिंग के इरादे से झूठी शिकायतें करते हैं। इस गिरोह ने हाल ही में आईएमए के सम्मानित सदस्य डॉ. संजय मिश्रा, जो वर्तमान में क्षेत्रीय संचालक स्वास्थ्य सेवाएँ और सीएमएचओ जबलपुर के पद पर पदस्थ हैं, को भी निशाना बनाया है। अतः हमारी मांग है कि नरेन्द्र कुमार राकोशिया एवं आशीष मिश्रा के विरुद्ध आपराधिक धाराओं में कठोर कार्रवाई की जाए एवं अन्य चार व्यक्तियों की भूमिका की विस्तृत जाँच की जाए। साथ ही डॉ. संजय मिश्रा की प्रतिष्ठा, गरिमा एवं सुरक्षा की प्रशासनिक रूप से रक्षा की जाए। जबलपुर जिले के सभी चिकित्सकों एवं निजी अस्पतालों को ब्लैकमेलिंग एवं झूठी शिकायतों से सुरक्षा प्रदान की जाए। आईएमए एवं एमपीएनएचए ने आयोजित पत्रकार वार्ता में यह स्पष्ट किया है कि चिकित्सा क्षेत्र को डराकर, धमकाकर, झूठे आरोपों में फँसाकर सेवा बाधित करने की प्रवृत्ति बर्दाश्त नहीं की जाएगी। पत्रकार वार्ता में डॉ. संजय मिश्रा, सीएमएचओ डॉ. अमरेन्द्र पांडेय, डॉ. रिचा शर्मा, डॉ. अविजीत विश्नोई, डॉ. आशुतोष सिलोधिया, डॉ. शामिख रजा, डॉ. आदित्या परिहार, डॉ. आदर्श विश्नोई सहित शहर के वरिष्ठ अस्पताल संचालक एवं डॉक्टर्स एवं मेडीकल आफिसर विक्टोरिया अस्पताल मौजूद रहे।

दावते इस्लामी इंडिया ने जबलपुर में पौधारोपण अभियान चलाया

जबलपुर। दावते इस्लामी इंडिया के तत्वावधान में शहर जबलपुर में एक व्यापक वृक्षारोपण अभियान चलाया गया। इस पहल का नेतृत्व हाजी मोहम्मद जावेद अत्तारी ने किया, जिसका मुख्य उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाना और अधिक से अधिक पेड़ लगाने के लिए लोगों को प्रेरित करना था। अभियान के दौरान, शहर के विभिन्न स्थानों पर बड़ी संख्या में पौधे रोपे गए। हाजी मोहम्मद जावेद अत्तारी ने बताया कि इस मौके पर लोगों को न केवल पौधे लगाने के लिए प्रोत्साहित किया गया, बल्कि उन्हें इन पौधों को बड़ा करके वृक्ष बनाने का संकल्प भी दिलाया गया। इस नेक कार्य के तहत आम जनता को मुफ्त पौधे भी वितरित किए गए, ताकि वे अपने घरों और आसपास के क्षेत्रों में भी हरियाली बढ़ा सकें। इस मुबारक मौके पर हाजी दिलशाद अत्तारी, सैय्यद तहीर बापु, सबीर अत्तारी, हमीद अत्तारी, मंजूर अत्तारी और गुलाम गौश साहब सहित कई अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

इंडियन कॉफ़ी हाउस की नई शाखा खुली गोलबाजार में

जबलपुर। इंडियन कॉफी हाउस (इच) ने अब अपनी नई शाखा (शुद्ध शाकाहारी रेस्टोरेंट) जबलपुर महाकोशल शहीद स्मारक गोल बाजार, जबलपुर के परिसर में खोली है। अब इस क्षेत्र के लोगों को खुशबूदार कॉफी और स्वादिष्ट दक्षिण भारतीय, उत्तर भारतीय और चायनीस-व्यंजन, विशेष रूप से मसाला डोसा, इडली, बड़ा सामबर और चटनी के साथ, कटलेट, उप्पमा, उथप्पम, बिरियानी आदि का आनंद लेने के लिए दूर जाने की जरूरत नहीं है। इंडियन कॉफी हाउस का उद्घाटन राकेश सिंह, लोक निर्माण विभाग मंत्री, मध्य प्रदेश के करकमलों द्वारा किया गया। अपने उद्घाटन भाषण के दौरान उन्होंने इस नई शाखा की प्रगति और सफलता के लिए शुभकामनाएं दीं। समारोह की अध्यक्षता जबलपुर नगर निगम के महापौर जगत बहादुर अन्नू ने की। समारोह में विशिष्ट अतिथियों के रूप में अजय विश्नोई विधायक (पाटन, जबलपुर), डॉ. अभिलाष

पांडे, विधायक जबलपुर उत्तर, अशोक ईश्वरदास रोहाणी, विधानसभा जबलपुर (कैंट), डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा, जेएनकेवीवी के नए कुलपति संदीप रजक, राज्य आयुक्त, दिव्यांगजन मध्यप्रदेश शासन और डॉ. जितेंद्र जामदार, जामदार अस्पताल, श्रीमती रूपा राव, जबलपुर महानगर महिला मोर्चा अध्यक्ष उपस्थित थे। सभी विशिष्ट अतिथियों और कई अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भी इस अवसर पर इंडियन कॉफी हाउस की सफलता के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रदान की।

इस अवसर पर सोसायटी के चेयरमेन ओ.के. राजगोपालन ने इंडियन कॉफी हाउस के संचालन हेतु इस स्थान के आवंटन के लिए महाकौशल शहीद स्मारक ट्रस्ट के प्रति सभी कर्मचारियों की ओर से हार्दिक आभार व्यक्त किया।

यह सन 1958 में स्थापित आईएसओ प्रमाणित सहकारी समिति और मध्य प्रदेश सहकारी समितियों अधिनियम 1960 के तहत पंजीकृत है। 1958 में बहुत विनम्र तरीके से 16 सदस्यों और जबलपुर में नाममात्र पूंजी (आरएस 1,365.00) और एक शाखा के साथ जबलपुर में शुरू हुई। अब सोसाइटी कीं भारत के 20 राज्यों में 186 से अधिक शाखाएं हैं। यह केवल एक श्रमिक सहकारी सोसायटी है, जो पूरी तरह से उसके कर्मचारियों द्वारा ही नियंत्रित है। सभी कर्मचारी सोसायटी के सदस्य हैं। इंडियन कॉफी हाउस इन 67 वर्षों के दौरान आतिथ्य सेवा में एक ब्रांड बनकर उभरा है और गुणवत्ता वाले भोजन और सर्वोत्तम सेवा से लोगों का विश्वास हासिल किया है।

मझौली के विभिन्न वार्डों में सड़कों का हाल है बेहाल

मझौली। नगर परिषद मझौली के विभिन्न वार्डों में बहुत सी सड़कों का हाल हाल है बेहाल बारिश आते ही दिखने लगें जगह-जगह गड्ढे लेकिन अधिकारी कर्मचारियों का इस ओर ध्यान नहीं जाता जबकि आए दिन इन गड्ढों के कारण गाड़ी वाहन चालक गिरते रहते हैं जब तक कोई बड़ा हादसा नहीं होता सुधार कार्य नहीं किया जाएगा नगर में अधिकतर सड़क नर्मदा लाइन जो नगर में बिछाई गई है और अभी तक पुरी नहीं हुई है जिस कारण से भी जगह-जगह गड्ढे रहते हैं जिनमें पानी भरा रहता है पिछले लगभग 8 वर्ष से अधिक हो गये है लेकिन अभी तक काम पुरा नही हुआ है। नगर परिषद में सड़कों को खोद दिया गया है अभी तक निर्माण या रेपेरीग नहीं की गई। अभी भी जहां तहां जरूरत पड़ने पर सड़क को खोद दिया जाता है। पानी भी हर वार्ड एवं हर एक लाईन सप्ताह दो या तीन बार चलाईं जाती है कुल 30 मिनट नगर वासियों ने जल्द से जल्द सभी सड़कों के गड्ढे एवं निर्माण कार्य शीघ्र से शीघ्र किया जाए।

निधन

श्रीमती सुदामा देवी गुप्ता- समीक्षा टाउन कांचघर निवासी श्री महावीर प्रसाद गुप्ता की धर्मपत्नी तथा वीरेंद्र व सुरेंद्र गुप्ता की मां श्रीमती सुदामा देवी गुप्ता का निधन हो गया। अंतिम यात्रा आज सुबह 10 बजे गौरीघाट मुक्तिधाम के लिये प्रस्थान करेगी।

श्रीमती तारा गुप्ता- इंद्रानगर गुप्तेश्वर निवासी श्री पिंटू गुप्ता की धर्मपत्नी श्रीमती तारा गुप्ता (40) का निधन हो गया। अंतिम संस्कार गौरीघाट मुक्तिधाम में संपन्न हुआ।

श्री राम मिलन चौधरी- रविदास नगर राधाकृष्णन वार्ड निवासी श्री राम मिलन चौधरी (65) का निधन हो गया। अंतिम संस्कार करियापाथर श्मशान भूमि में किया गया।

श्रीमती पद्माश्री महापात्रा- नर्मदा पिंकी सिटी तिलवारा रोड निवासी श्री विमल कृष्ण महापात्रा की धर्मपत्नी श्रीमती पद्माश्री महापात्रा (53) का निधन हो गया। अंतिम संस्कार गौरीघाट मुक्तिधाम में संपन्न हुआ।

श्रीमती कमला कौल- कृपाल चौक गुप्तेश्वर निवासी श्री चंद्र नारायण कौल की धर्मपत्नी श्रीमती कमला कौल (92) का निधन हो गया। अंतिम संस्कार गुप्तेश्वर मोक्षधाम में किया गया।

श्री लालमन यादव- सेठी नगर गुप्तेश्वर निवासी श्री लालमन यादव (72) का निधन हो गया। अंतिम संस्कार गौरीघाट मुक्तिधाम में संपन्न हुआ।

श्रीमती कांता देवी मदान- जानकी विहार गंगासागर रोड निवासी श्री राजेंद्र मदान की धर्मपत्नी श्रीमती कांता देवी मदान (90) का निधन हो गया। अंतिम संस्कार गुप्तेश्वर मोक्षधाम में किया गया।

श्रीमती आशा यादव- हृदय नगर गुप्तेश्वर निवासी श्री कैलाश यादव की धर्मपत्नी श्रीमती आशा यादव (65) का निधन हो गया। अंतिम संस्कार गौरीघाट मुक्तिधाम में संपन्न हुआ।

श्री अशोक कुमार बहादुर- गोकलपुर इंजीनियरिंग कॉलेज के पास निवासी श्री अशोक कुमार बहादुर (61) का निधन हो गया। अंतिम संस्कार गौरीघाट मुक्तिधाम में किया गया।

श्रीमती भुग्गी बाई बर्मन- दुर्गानगर भटौली गौरीघाट निवासी श्री दसई बर्मन की धर्मपत्नी श्रीमती भुग्गी बाई बर्मन (73) का निधन हो गया। अंतिम संस्कार गौरीघाट मुक्तिधाम में संपन्न हुआ।

हरिभूमि
निजी/शोक/उठावना, पगड़ी रस्म, पुण्यतिथि संबंधी संदेश प्रकाशित कराने के लिए
अब मात्र 40/- प्रति वर्ग से.मी.
फिक्स साइज:- 1x4 से.मी. ब्लैक&व्हाईट 300/-
फिक्स साइज:- 1x4 से.मी. रंगीन 400/-
फिक्स साइज 1x5 से.मी. रंगीन 1100/-
सम्पर्क करें विज्ञापन विभाग:- 9303308294, 9407362100

नशे से दूर रहने की दी सलाह

पाटन। बस स्टैंड इलाके में नशा मुक्ति जन जागरण अभियान के तहत नागरिकों और पुलिस प्रशासन ने मानव श्रृंखला बनाकर लोगों को नशे से दूर रहने की सलाह दी। जबलपुर एसपी संपत उपाध्याय के मार्गदर्शन में जबलपुर में नशे से दूरी है जरूरी, नशा मुक्ति जन जागरण अभियान 15 जुलाई से 30 जुलाई 2025 तक मध्य प्रदेश शासन एवं पुलिस मुख्यालय के निर्देश पर प्रभावी रूप से चलाया जा रहा है पाटन में भी टी आई गोपेंद्र सिंह राजपूत के नेतृत्व में यह आंदोलन लगातार चल रहा है अभियान के दौरान अलग-अलग कार्यक्रम आयोजित किया जा रहे हैं जिसके माध्यम से लोगों को नशे से दूरी है जरूरी अभियान के माध्यम से नशे से दूर रहने की सलाह दी जा रही है। नशे से दूरी है जरूरी अभियान पाटन इलाके में नगर से लेकर गांव तक जा पहुंचा है अभियान के तहत जागरूकता का संदेश दिया जा रहा है और इसमें हर वर्ग ने अपना संसहयोग दिखाया है रविवार दोपहर 1:00 बजे पाटन में मानव श्रृंखला का आयोजन किया गया और बस स्टैंड इलाके में मानव श्रृंखला बनाकर लोगों को नशे से दूर रहने की सलाह दी गई। बताया गया कि किस तरह से नशा परिवार और समाज को बर्बाद करता है यदि हम उससे दूर रहेंगे तो समाज को उत्कृष्ट और बेहतर बना सकेंगे।

स्वस्थ पर्यावरण के लिए पौधारोपण आवश्यक: विधायक संतोष बरकडे

तिलसानी में रोपे गये हजारों पौधे

सिहोरा। स्वस्थ पर्यावरण के लिए पौधारोपण आज की महती आवश्यकता है यह वनों की कटाई से होने वाले प्रदूषण को कम करने में तो मदद ही है साथ ही वायुमंडल में सी ओ टू के स्तर को कम करके जलवायु परिवर्तन से भी लड़ता है। यह वनों की कटाई के हानिकारक प्रभावों से निपटने के लिए पौधारोपण की आवश्यकता पर बल देता है। उक्ताशय के विचार विधायक संतोष बरकडे ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से प्रेरित एक पेड़ मां के नाम अभियान के अंतर्गत अपने जन्मदिन के अवसर पर तिलसानी के शिव टेकरी में आयोजित विशाल पौधारोपण कार्यक्रम में व्यक्त किए। आयोजन में उपस्थित अनेक गणमान्य नागरिकों ने अपनी मां के नाम पर एक एक अनेक फलदार एंव छायादार पौधे का रोपण किया। इस अवसर पर बहोरीबंद विधायक प्रणय प्रभात पांडे,पूर्व विधायक दिलीप दुबे,नंदनी मरावी,राजा मोर, राजेश दाहिया,शारदा तिवारी,पुष्पराज सिंह बघेल, राजमणि सिंह बघेल, अनुपम सराफ,अंकित तिवारी,महेंद्र बरकडे आदि उपस्थित थे।

नई दिल्ली। भारत की संसद में महिलाओं की कम भागीदारी कोई नई बात नहीं है, लेकिन मुस्लिम महिलाओं की मौजूदगी इससे भी ज्यादा कम रही है। स्वतंत्रता के बाद से अब तक केवल 18 मुस्लिम महिलाएं ही लोकसभा पहुंच पाई हैं। इस दिलचस्प और चिंताजनक जानकारी को एक नई किताब 'सदन से गायब - लोकसभा में मुस्लिम महिलाएं' ('मिसिंग फ्रॉम द हाउस- मुस्लिम वीमेन इन द लोक सभा') में सामने लाया गया है। इस किताब को पत्रकार रशीद किदवई और राजनीतिक विश्लेषक अंबर कुमार घोष ने मिलकर लिखा है।

लोकसभा में अब तक सिर्फ 18 मुस्लिम महिलाएं पहुंचीं, 13 वंशवाद की देन

सदन से गायब- लोकसभा में मुस्लिम महिलाएं किताब में दावा

वंशवाद बना सहारा

किताब में बताया गया है कि इन 18 मुस्लिम महिला सांसदों में से 13 महिलाएं राजनीतिक परिवारों से थीं। यानी, चाहे वंशवाद लोकतंत्र के लिए बाधा हो, लेकिन मुस्लिम महिलाओं को राजनीति में आने का मौका इसी रास्ते से ज्यादा मिला।

इन राज्यों से आज तक नहीं पहुंचीं

अब तक कुल 18 लोकसभाएं बनी हैं, लेकिन 5 बार लोकसभा में एक भी मुस्लिम महिला नहीं थी। 543 सदस्यों वाली लोकसभा में कभी भी एक समय में 4 से ज्यादा मुस्लिम महिलाएं नहीं पहुंच पाईं। हैरानी की बात ये भी है कि दक्षिण भारत के पांच राज्यों, केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना से अब तक कोई मुस्लिम महिला लोकसभा में नहीं पहुंच सकी, जबकि इन राज्यों को राजनीति और शिक्षा के लिहाज से बेहतर माना जाता है।

18 मुस्लिम महिला सांसदों की सूची

मोफिदा अहमद (1957, कांग्रेस), जोहराबेन चावड़ा (1962-67, कांग्रेस), मैमुना सुल्तान (1957-67, कांग्रेस)। बेगम अकबर जहां अब्दुल्ला (1977-79, 1984-89, नेशनल कॉन्फ्रेंस), रशीदा हक (1977-79, कांग्रेस)। मोसीना किदवई (1977-89, कांग्रेस), आबिदा अहमद (1981-89, कांग्रेस), नूर बानो (1996, 1999-2004, कांग्रेस)। रुबाब सैयदा (2004-09, समाजवादी पार्टी), महबूबा मुफ्ती (2004-09, 2014-19, पीडीपी)। तबस्सुम हसन (2009-14, सपा/लोजपा/बसपा), मौसम नूर (2009-19, तृणमूल कांग्रेस), कैसर जहां (2009-14, बसपा)। ममताज संगमिता (2014-19, तृणमूल कांग्रेस), साजदा अहमद (2014-24, तृणमूल कांग्रेस), रानी नाराह (1998-2004, 2009-14, कांग्रेस)। नुसरत जहां रूही (2019-24, तृणमूल कांग्रेस), इकरा हसन चौधरी (2024-वर्तमान, समाजवादी पार्टी)।

ऐसे लोकसभा में पहुंचीं ये महिलाएं

इनमें से मोसीना किदवई एक बड़ी नेता बनीं और कई मंत्रालयों की जिम्मेदारी संभाली जबकि कैसर जहां, जो एक चायवाले की पत्नी थीं, को 2009 में बसपा प्रमुख मायावती ने टिकट दिया और उन्होंने चुनाव जीता। आबिदा अहमद, देश के पांचवें राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद की पत्नी थीं, जो चुनाव जीतने वाली पहली और इकलौती प्रथम महिला बनीं। नूर बानो, रामपुर की रानी, ने 1996 और 1999 में चुनाव जीते, लेकिन जया प्रदा के साथ मुकाबले में हार गईं। बंगाली अभिनेत्री नुसरत जहां ने भी 2019 में तृणमूल कांग्रेस से चुनाव जीतकर कई परंपराएं तोड़ीं।

वर्तमान में केवल एक मुस्लिम महिला सांसद

वर्तमान 18वीं लोकसभा में सिर्फ एक मुस्लिम महिला सांसद हैं- इकरा हसन चौधरी। वे समाजवादी पार्टी से चुनी गई हैं और उन्होंने भाजपा के एक वरिष्ठ नेता को हराकर सुर्खियां बटोरीं। वे लंदन से पढ़ी हुईं, युवा और प्रभावशाली नेता के रूप में उभर रही हैं।

कांग्रेस नेता शशि थरूर की टिप्पणी

किताब की भूमिका में कांग्रेस सांसद शशि थरूर लिखा हैं- 'आजादी के 78 साल बाद भी हम अपने लोकतंत्र पर गर्व तो करते हैं, लेकिन सच्चाई ये है कि हमने महिलाओं, खासकर मुस्लिम महिलाओं को कभी बराबरी नहीं दी।' उन्होंने कहा कि मीडिया और समाज की चुप्पी ने इस सच्चाई को हमेशा छुपा कर रखा है।

खबर संक्षेप

'आप' विधायक इस्तीफा वापस लेने हुईं सहमत

चंडीगढ़। पंजाब विधानसभा की सदस्यता से इस्तीफा और राजनीति छोड़ने की घोषणा के एक दिन बाद, आप विधायक और पूर्व मंत्री अनमोल गगन मान रविवार को अपना फैसला वापस लेने पर सहमत हो गईं। उन्होंने यह निर्णय तब किया, जब आम आदमी पार्टी की पंजाब इकाई के अध्यक्ष अमन अरोड़ा ने उनसे मुलाकात की और पार्टी व क्षेत्र के लिए काम जारी रखने का आग्रह किया। अरोड़ा ने 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा कि अनमोल 'आप' और अरविंद केजरीवाल के परिवार का हिस्सा थीं, हैं और रहेंगी।"

दो हादसों में दो कांवड़ियों की मौत, आठ घायल

मुजफ्फरनगर। मुजफ्फरनगर जिले में दिल्ली-हरिद्वार राष्ट्रीय राजमार्ग पर दो अलग-अलग हादसों में दो कांवड़ियों की मौत हो गई तथा आठ अन्य गंभीर रूप से घायल हो गये। पुलिस ने बताया कि पहली घटना में कैराना निवासी अभिषेक (28) नामक एक कांवड़िये की बरला पुल के पास दो मोटरसाइकिलों की टक्कर में मौत हो गई तथा चार अन्य गंभीर रूप से घायल हो गये। एक अन्य घटना में सलीमपुर बाईपास के पास दो मोटरसाइकिलों की टक्कर में अनिल (23) नामक कांवड़िये की मौत हो गई तथा चार अन्य घायल हो गये।

पैसों के लेनदेन पर युवक को जिंदा जलाया, मौत

कोट्टायम। केरल में कोट्टायम जिले के पाला में पैसों की लेकर देन को लेकर उत्पन्न हुए विवाद में 55 वर्षीय एक व्यक्ति को जिंदा जला दिया जिससे उसकी मौत हो गई। पुलिस के मुताबिक रामपुरम बस स्टेशन के पास 19 जुलाई को पैसों की लेनदेन को लेकर हुए विवाद की वजह से तुलसी दास ने आभूषण की दुकान चलाने वाले अशोकन पर पेट्रोल छिड़क कर उन्हें आग लगा दी, जिसके कारण वह 80 प्रतिशत तक जल गए थे। उसने बताया कि रविवार की सुबह कोट्टायम मेडिकल कॉलेज अस्पताल में अशोकन की इलाज के दौरान मौत हो गई। तुलसी दास ने बाद में उसने स्थानीय पुलिस थाने में आत्मसमर्पण कर दिया।

महाराष्ट्र में भाषा विवाद और गहराया, लोकल ट्रेन में महिलाओं में नोक-झोंक

महाराष्ट्र में रहना है, तो मराठी सीखनी होगी मनसे की चेतावनी, जगह-जगह लगाए पोस्टर्स

एजेंसी ▶▶| मुंबई

महाराष्ट्र में जारी भाषा विवाद के बीच महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना ने नवी मुंबई के विभिन्न इलाकों में पोस्टर लगाकर गैर-मराठी भाषियों को चेतावनी दी है कि यदि उन्हें महाराष्ट्र में रहना है, तो मराठी भाषा सीखनी होगी। मनसे द्वारा लगाए गए पोस्टरों पर एक कार्टून में लिखा है, एजी मराठी बोलना सीख लो वरना वो मनसे वाला आ जाएगा। इसके साथ ही एक और संदेश में कहा गया है, हमारा आपसे कोई झगड़ा नहीं है, लेकिन अगर यहां मस्ती करोगे तो महाराष्ट्र का झटका जरूर लगेगा। वहीं इस विवाद के बीच मुंबई लोकल ट्रेन में सीट में बैठने को लेकर हुई महिलाओं के बीच भी भाषा विवाद देखने को मिला। इस विवाद में लोग समर्थन व विरोध करते दिखे।

स्थानीय भाषा का सम्मान सभी करें : राज ठाकरे

दरअसल, मनसे प्रमुख राज ठाकरे लंबे समय से महाराष्ट्र में मराठी भाषा और संस्कृति को प्राथमिकता देने की वकालत करते आए हैं। उनका मानना है कि राज्य में रहने वाले सभी लोगों को स्थानीय भाषा का सम्मान करना चाहिए और उसे सीखना चाहिए। बता दें कि इस फैसले को विपक्षी दलों, खासकर शिवसेना (यूबीटी) और महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) ने हिंदी थोपने की कोशिश बताया और इसका कड़ा विरोध किया। इसके बाद से ही महाराष्ट्र में भाषा विवाद को लेकर मामले सामने आ रहे हैं।

मराठी को प्राथमिकता दें, लेकिन हिंदी... : मनसे का अभियान

राज ठाकरे की पार्टी मनसे ने विशेष रूप से हिंदी भाषी उत्तर भारतीयों के खिलाफ अभियान चलाती हुई नजर आती है। मनसे का कहना है कि मुंबई और महाराष्ट्र में मराठी को प्राथमिकता दी जाए। मराठी को स्कूलों में मराठी को प्राथमिकता दी जाए, लेकिन हिंदी और अन्य भाषाओं का भी सम्मान हो। शिक्षा, रोजगार और प्रशासन में एक संतुलित भाषा नीति बनाई जाए।

क्या है पूरा मामला

बता दें कि महाराष्ट्र में पिछले कुछ समय से हिंदी और मराठी भाषा को लेकर विवाद चल रहा है। महाराष्ट्र सरकार ने स्कूलों में तीसरी भाषा के रूप में हिंदी को अनिवार्य करने का आदेश जारी किया था। हालांकि, बाद में इस आदेश में बदलाव कर सामान्य रूप से हिंदी को तीसरी भाषा बनाने की बात कही गई, जिसमें 20 छात्रों के सहमत होने पर किसी अन्य भारतीय भाषा का विकल्प चुनने की अनुमति दी गई।

लोकल ट्रेन में महिलाओं में बहस

भाषा विवाद को लेकर कल शाम सेंट्रल लाइन की एक लोकल ट्रेन के लेडीज कोच में मराठी और हिंदी को लेकर महिलाओं के बीच जबरदस्त बहस हो गई। सीट को लेकर शुरू हुआ, मामूली विवाद देखते ही देखते भाषा को लेकर तकरार में बदल गया। घटना का एक वीडियो अब सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है।

मराठी बोलो नहीं तो बाहर निकलो

लोकल ट्रेन के इस वीडियो में एक महिला मराठी में बोलते हुए दूसरी महिलाओं से कहती सुनाई दे रही है- हमारे मुंबई में रहना है, तो मराठी बोलो, नहीं तो बाहर निकलो। ट्रेन में सफर कर रही दूसरी महिलाएं भी इस बहस में शामिल हो गईं और बात भाषा विवाद तक पहुंच गई। भाषा को लेकर बढ़ते टकराव को देखते हुए अब रेलवे सुरक्षा बल और जीआरपी भी इस मामले को गंभीरता से ले रही है।

ट्रंप के क्रेडिट लेने पर बोले उपराष्ट्रपति

दुनिया की कोई ताकत भारत को निर्देश नहीं दे सकती : धनखड़

एजेंसी ▶▶| नई दिल्ली

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के बार-बार किए जा रहे इस दावे कि उन्होंने भारत और पाकिस्तान के बीच सीजफायर कराया है, पर भारत के उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने जो र दा र प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि भारत किसी भी बाहरी ताकत से निर्देश लेने वाला देश नहीं है और देश की आंतरिक मामलों को संभालने की जिम्मेदारी केवल भारतीय नेतृत्व पर है।

उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि भारत अपने अन्य देशों के साथ सहयोग करता है, एक दूसरे का सम्मान करता है। कूटनीतिक संवाद में विश्वास करता है, लेकिन अंततः हर महत्वपूर्ण निर्णय भारत के नेतृत्व द्वारा लिया जाता है।

भारत अपने फैसले खुद लेता है: उपराष्ट्रपति

धनखड़ ने कहा कि भारत पूरी तरह से एक संप्रभु राष्ट्र है, और यह किसी भी बाहरी ताकत से अपने मामलों को चलाने के लिए निर्देश नहीं लेता। उन्होंने यह भी कहा कि भारतीय नेतृत्व के निर्णयों को कोई अन्य देश प्रभावित नहीं कर सकता। उपराष्ट्रपति ने कहा कि लोग किसी भी बाहरी नैरेटिव से प्रभावित न हों और यह समझें कि भारत को अपने मामलों को संभालने की पूरी स्वतंत्रता है।

क्रिकेट का उदाहरण देते हुए समझाया

अपने बयान में उपराष्ट्रपति ने क्रिकेट का एक दिलचस्प उदाहरण दिया। उन्होंने कहा कि हर खराब गेंद को खेलना जरूरी नहीं होता। इस बात को समझाने के लिए उन्होंने उदाहरण दिया कि क्रिकेट पिच पर अच्छा खिलाड़ी वही होता है जो खराब गेंदों को छोड़ देता है, भले ही वे लुभावनी क्यों न हों। उन्होंने कहा कि ऐसे गेंदों को खेलने की जरूरत नहीं होती, क्योंकि इससे आपकी सफलता पर असर पड़ सकता है। उन्होंने यह भी जोड़ा कि जो खिलाड़ी इन लुभावनी गेंदों को खेलते हैं, उनके पास विकेटकीपर और गली में फील्डर होते हैं, ताकि वे उन्हें रोक सकें।

अग्निवीर बनने मानसिक फिट होने का टेस्ट पास करना हुआ जरूरी

भर्ती प्रक्रिया में किया एक महत्वपूर्ण बदलाव

एजेंसी ▶▶| नई दिल्ली

भारतीय सेना ने अग्निवीर भर्ती प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण बदलाव किया है। अब सिर्फ शारीरिक फिटनेस ही नहीं, बल्कि मानसिक मजबूती की भी परख होगी। अगस्त 2025 से शुरू होने वाली इस नई व्यवस्था के तहत अग्निवीर उम्मीदवारों को फिजिकल टेस्ट के साथ-साथ एक ऑनलाइन साइकोलॉजिकल टेस्ट भी देना होगा। यह बदलाव मध्य प्रदेश के ग्वालियर, चंबल और बुंदेलखंड जिलों में भर्ती रैलियों में पहली बार लागू किया जाएगा।

क्यों जरूरी है साइकोलॉजिकल टेस्ट?

सेना के लिए यह बेहद जरूरी हो गया है कि वह न केवल शारीरिक रूप से मजबूत जवानों को चुने, बल्कि ऐसे उम्मीदवारों को भी चुना जाए जो मानसिक रूप से कठिनाइयों और तनाव से निपटने में सक्षम हों। रक्षा मंत्रालय के अधीन रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान ने इस टेस्ट को तैयार किया है ताकि उम्मीदवारों की मानसिक क्षमता और तनाव सहन करने की क्षमता को सही ढंग से परखा जा सके। इससे सेना को वे जवान मिलेंगे जो युद्ध या अन्य कठिन परिस्थितियों में भी अपने कर्तव्य को पूरी निष्ठा से निभा सकें।

क्या होगा टेस्ट का फॉर्मेट?

यह साइकोलॉजिकल टेस्ट लगभग 15 मिनट का ऑनलाइन टेस्ट होगा, जो फिजिकल टेस्ट के बाद उम्मीदवारों को मोबाइल फोन पर भेजा जाएगा। टेस्ट के लिए पात्र होने के लिए उम्मीदवार को पहले 1600 मीटर की दौड़ पूरी करनी होगी। जो उम्मीदवार इस मानसिक परीक्षा में सफल नहीं होते, उन्हें भर्ती प्रक्रिया के अगले चरण में भाग लेने का मौका नहीं मिलेगा। यह कदम सेना की चयन प्रक्रिया को और अधिक किफायती और सटीक बनाने के उद्देश्य से उठाया गया है।

अवैध गोदाम से भारी मात्रा में यूरिया जब्त एक गिरफ्तार

नई दिल्ली। बाहरी उत्तरी दिल्ली के नरेला इलाके में एक गोदाम से कथित तौर पर बिना वैध लाइसेंस के अवैध रूप से भंडारित किए गए यूरिया के 1,500 से अधिक बोरे जब्त किए गए हैं। पुलिस ने बताया कि उसे 18 जुलाई को यूरिया के अवैध भंडारण के संबंध में सूचना मिली थी, जिसके बाद पुलिस ने यह कार्रवाई की। बयान में कहा गया कि गोदाम मालिक अतुल बंसल ने 19 जुलाई को जब गोदाम खोला तो वहां सफेद और पीले रंग के बोरों में भारी मात्रा में रखी यूरिया मिली। इसके बाद उस पर मामला दर्ज कर उसे गिरफ्तार किया गया।

बड़ी कामयाबी! मलेरिया की पहली भारतीय वैक्सीन एडफाल्सीवैक्स तैयार

प्राइवेट कंपनी के साथ डील करेगा आईसीएमआर

एजेंसी ▶▶| नई दिल्ली

भारत में बरसात के मौसम में मलेरिया और डेंगू जैसी संक्रामक जानलेवा बीमारियों का खतरा हमेशा बढ़ जाता है जिसमें मलेरिया सबसे ज्यादा होता है जो मच्छरों के द्वारा फैलता है। हालांकि, अब इस समस्या का समाधान भारतीय वैज्ञानिकों ने ढूंढ लिया है। भारत ने मलेरिया के खिलाफ पहला स्वदेशी वैक्सीन तैयार किया है। इस वैक्सीन को एडफाल्सीवैक्स नाम दिया गया है। जिससे इस बीमारी पर नियंत्रण पाना आसान हो सकता है। इस वैक्सीनेशन से न केवल मलेरिया संक्रमण को रोका जाएगा, बल्कि इसके फैलने के खतरे को भी कम किया जाएगा।

वैक्सीनेशन का शोध और परीक्षण

यह टीका आईसीएमआर के नेशनल मलेरिया रिसर्च इंस्टीट्यूट और नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इम्यूनोलॉजी के वैज्ञानिकों के साथ मिलकर तैयार किया गया है। प्री क्लिनिकल वैलिडेशन के दौरान, वैज्ञानिकों ने पाया कि यह टीका काफी प्रभावी और सुरक्षित है। आरएमआरसी के सीनियर साइंटिस्ट, डॉ. सुशील सिंह के अनुसार, इस वैक्सीन के द्वारा शरीर में शक्तिशाली एंटीबॉडी बनते हैं जो मलेरिया के संक्रमण को फैलने से रोकते हैं।

एडफाल्सीवैक्स दिया गया नाम

नई दिल्ली स्थित भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद और भुवनेश्वर स्थित क्षेत्रीय चिकित्सा अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिकों ने मिलकर इस टीके को तैयार किया है। आईसीएमआर ने बताया कि इस वैक्सीन को एडफाल्सीवैक्स नाम दिया गया है और इसे प्राइवेट कंपनियों के साथ मिलकर प्रोडक्शन के लिए डील की प्रक्रिया भी शुरू कर दी गई है। इस वैक्सीनेशन से न केवल मलेरिया संक्रमण को रोका जाएगा, बल्कि इसके फैलने के खतरे को भी कम किया जाएगा।

मुस्लिम भी करते हैं इस शक्तिपीठ की पूजा पहुंचने के लिए पूरी करनी पड़ती हैं 2 शर्तें

नई दिल्ली। आपने अकसर पाकिस्तान से हिंदू मंदिरों को तोड़े जाने की खबरें आम सुनी होंगी लेकिन क्या आप जानते हैं मां के 51 शक्तिपीठों में से एक शक्तिपीठ ऐसा हैं, जहां दुनियाभर से मुस्लिम लोग आकर अपना सिर झुकाते हैं। इस मंदिर में मां की एक झलक पाने के लिए भक्तों की लंबी कतारें लगी रहती हैं। खुद मुस्लिम लोग इस मंदिर की सुरक्षा और देखरेख करते हैं। जी हां, इस अद्भुत शक्तिपीठ का नाम हिंगलाज मंदिर है।

पाकिस्तान के बलूचिस्तान में है मंदिर

बता दें, माता का हिंगलाज मंदिर, पाकिस्तान के बलूचिस्तान में बना हुआ है। हिंगलाज मंदिर में हिंदू लोगों के साथ मुस्लिम लोगों की भी गहरी श्रद्धा बनी हुई है। इस मंदिर में पहुंचकर किसी भी भक्त को यह पता नहीं चलता कि कौन हिंदू है और कौन मुस्लिम। यहां खुद कई बार पुजारी और सेवक नमाजी टोपी पहने दिखते हैं तो मुस्लिम पूजा करते दिख जाते हैं। आइए जानते हैं इस मंदिर से जुड़ी रोचक कहानी, इतिहास और विशेषता।

हिंगलाज माता की कहानी

हिंगलाज माता को मां भगवती का रूप माना जाता है। पुराणों के अनुसार भगवान शंकर के मना करने के बावजूद माता सती एक बार पिता प्रजापति के आयोजित यज्ञ में पहुंच गईं। जहां उन्होंने अपने पिता के मुख से अपने पति के लिए तिरस्कार भरे शब्द सुनें। माता सती उन शब्दों को सुनकर इतनी लज्जित और क्रोधित हुई कि उन्होंने यज्ञ के हवनकुंड में ही कूदकर अपने प्राण त्याग दिए। भगवान शिव को जब इस बात का पता चला तो वे क्रोधित हो उठे। उन्होंने माता सती के अर्धजले शव को कंधे पर लादकर तांडव करना शुरू कर दिया। अंत में देवताओं ने भगवान विष्णु से प्रार्थना करके शिव को शांत करने की प्रार्थना की। भगवान विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से सती के शरीर के 51 टुकड़े कर दिए। माता सती का शरीर 51 टुकड़ों में कटकर जिस-जिस जगह पर गिरा वो शक्तिपीठ कहलाएं। कहा जाता है कि हिंगलाज में माता सती का सिर गिरा था। इसलिए इस शक्तिपीठ को सबसे चमत्कारिक माना जाता है।

मंदिर तक पहुंचने के लिए लेनी पड़ती हैं दो शपथ

बताया जाता है कि हिंगलाज माता के दर्शन के लिए श्रद्धालुओं को यात्रा शुरू करने से पहले 2 शपथ लेनी पड़ती हैं। अपनी पहली शपथ में श्रद्धालुओं को माता के दर्शन करके वापस लौटने तक संन्यास लेना होता है। दूसरी शपथ में पूरी यात्रा में किसी दूसरे यात्री को अपनी सुराही का पानी नहीं पिलाना होता है, भले ही वो यात्री रास्ते में प्यास से तड़प कर मर क्यों ना जाए। माना जाता है कि ये दोनों शपथ हिंगलाज माता मंदिर तक पहुंचने के लिए भक्तों की परीक्षा लेने की एक प्राचीन परंपरा है। जो भक्त इन दोनों शर्तों को पूरा नहीं कर पाता है, उसकी यात्रा पूरी नहीं मानी जाती है।

मुस्लिम लोगों का 'नानी मंदिर' है हिंगलाज मंदिर

बलूच और सिंध के मुस्लिम लोगों के अलावा पाकिस्तान,अफगानिस्तान, मिस्र और ईरान के मुस्लिम लोग भी हिंगलाज मंदिर को 'नानी मंदिर', 'नानी पीर' या 'नानी के हज' के तौर पर जानते और मानते हैं। इस मंदिर में आकर वो माता हिंगलाज को नानी के तौर पर पूजते हैं।

विधेयकों को मंजूरी देने सुको में सुनवाई कल

नई दिल्ली। विधान मंडल से पारित विधेयकों को मंजूरी देने के लिए राज्यपाल और राष्ट्रपति द्वारा समयसीमा और प्रक्रियाओं को निर्धारित करने के महत्वपूर्ण मुद्दे पर सुप्रीम कोर्ट 22 जुलाई को सुनवाई करेगा। इसके अलावा ये भी सवाल उठाया गया है कि जब कोई विधेयक राज्यपाल के पास आते हैं तो उनके पास क्या विकल्प उपलब्ध होते हैं और क्या राज्यपाल मंत्रीपरिषद की सलाह मानने के लिए बाध्य है? इस मामले में राष्ट्रपति ने सुप्रीम कोर्ट को संदर्भ (रेफरेंस) भेजा है, जिसमें 14 सवालों पर जवाब मांगा है। इस सुनवाई के लिए सीजेआई जस्टिस बी. आर. गवई की अध्यक्षता में पांच जजों की विशेष पीठ गठित की गई है। बता दें कि राज्य विधान मंडल द्वारा पारित विधेयक राज्यपाल या राष्ट्रपति के पास मंजूरी के लिए भेजे जाते हैं तो कई बार इन्हें अनिश्चितकाल तक लंबित रखा जाता है। राष्ट्रपति द्वारा भेजे गए संदर्भ में सुप्रीम कोर्ट से पूछा गया है कि क्या अदालत राज्यपालों और राष्ट्रपति के लिए विधेयकों पर फैसले लेने की समयसीमा और प्रक्रियाएं निर्धारित कर सकती है।

इंस्टाग्राम पर शुरू हुआ प्यार, लिव-इन में बदला रिश्ता

महिला एएसआई की हत्या करने वाले जवान ने किया समर्पण

एजेंसी ▶▶| अहमदाबाद

गुजरात के कच्छ जिले के एक पुलिस थाने में तैनात एक महिला असिस्टेंट सब-इंस्पेक्टर की कल रात उसके लिव-इन पार्टनर ने उसके घर पर कथित तौर पर गला घोंटकर हत्या कर दी। पुलिस ने बताया कि यह मामला शनिवार सुबह तब सामने आया जब आरोपी केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के जवान दिलीप डांगचिया ने कच्छ के अंजार पुलिस थाने में सरेंडर कर दिया। महिला अधिकारी की पहचान अरुणा नटूभाई जादव के रूप में हुई है, जोकि यहीं तैनात थी। जानकारी के अनुसार, दिलीप मणिपुर में तैनात सीआरपीएफ का जवान है और अरुणा के पड़ोस के एक गांव का निवासी है।

किसी बात को लेकर हुई तीखी बहस

शुरुआती जांच में पुलिस को पता चला कि अरुणा मूल रूप से सुरेंद्रनगर की रहने वाली थी और अंजार की गंगोत्री सोसाइटी-2 में रहती थी। शुक्रवार देर रात, महिला के घर पर अरुणा और दिलीप डांगचिया के बीच किसी बात को लेकर तीखी बहस हुई जिसके बाद दिलीप ने कथित तौर पर अरुणा की गला घोंटकर हत्या कर दी। उसने घटना के अगली सुबह पुलिस के सामने सरेंडर कर दिया।

अमेरिका लाखों मक्खियों को पैदा कर उन्हें विमानों से जमीन पर गिराने की बना रहा योजना

वॉशिंगटन। आसमान में विमानों से करोड़ों मक्खियों का गिरना किसी बुरे सपने जैसा लग सकता है। लेकिन, विशेषज्ञों का कहना है कि यह अमेरिका की दक्षिण-पश्चिम सीमा पर आक्रमण करने वाले एक मांसाहारी खतरे के खिलाफ पशुओं का सबसे अच्छा बचाव साबित हो सकता है। यह पूरा क्षेत्र न्यू वर्ल्ड स्क्रूवर्म का प्रकोप झेल रहा है। यह एक प्रकार की मक्खी का लार्वा रूप है, जो गर्म खून वाले जानवरों के घावों में घोंसला बनाता है और उन्हें धीरे-धीरे जिंदा खा जाता है। यह प्रकोप 2023 की शुरुआत से पूरे मध्य अमेरिका में फैल रहा है। इसका संक्रमण पनामा, कोस्टा रिका, निकारागुआ, होंडुरास, ग्वाटेमाला, बेलीज़ और अल सल्वाडोर में दर्ज किया गया है।

नवंबर में मेक्सिको पहुंची थी यह बीमारी

न्यू वर्ल्ड स्क्रूवर्म नाम की यह मक्खी नवंबर में दक्षिणी मेक्सिको पहुंची, जिससे अमेरिकी कृषि उद्योग के अधिकारियों में चिंता पैदा हो गई और सीमावर्ती क्षेत्र के कई मवेशी, घोड़े और बाइसन व्यापारिक बंदरगाहों को बंद करना पड़ा। यह पहली बार नहीं होगा जब अमेरिका को इन आक्रामक कीड़ों से जूझना पड़ा हो। 1960 और 1970 के दशक में अमेरिका ने न्यू वर्ल्ड स्क्रूवर्म की आबादी को लगभग पूरी तरह से खत्म कर दिया था। तब अमेरिका ने इस प्रजाति के नसबंदी किए गए नर मक्खियों का प्रजनन कर उन्हें जंगली मादा मक्खियों के साथ संभोग के लिए विमान में भरकर जंगलों में गिरा दिया गया था।

मक्खियों का मुकाबला करेगी यह रणनीति

यह रणनीति मूलतः मक्खियों से मक्खियों का मुकाबला का था। इससे धीरे-धीरे कीड़ों की आबादी को कम करती गई क्योंकि इससे उन्हें और अंडे देने से रोका गया। अब, जब ये कीड़े उत्तर की ओर फैल रहे हैं, तो अधिकारियों को उम्मीद है कि यह तरीका फिर से कारगर हो सकता है। हालांकि, आज पनामा में केवल एक ही फैसिलिटी है जो न्यू वर्ल्ड स्क्रूवर्म के प्रसार के लिए उन्हें प्रजनन कराती है। 80 अमेरिकी सांसदों द्वारा 17 जून को लिखे गए एक पत्र के अनुसार, इस प्रकोप को धीमा करने के लिए करोड़ों और बांझ मक्खियों की आवश्यकता है।

न्यू वर्ल्ड स्क्रूवर्म का प्रकोप झेल रहा है अमेरिका

200 से 300 अंडे देती है एक मक्खी

कॉफमैन ने बताया, "संभोग के बाद, मादा मक्खी एक जीवित मेजबान को ढूंढती है, उसके घाव पर बैठती है, और 200 से 300 अंडे तक देती है।" "12 से 24 घंटों के बाद, ये सभी अंडे फूट जाते हैं, और वे तुरंत उस जानवर के ऊतकों में बिल बनाकर खाना शुरू कर देते हैं, जिससे बहुत बड़े घाव बन जाते हैं।" टेक्सास पशु स्वास्थ्य आयोग के उप-कार्यकारी निदेशक और सहायक राज्य पशुचिकित्सक थॉमस लैंसफोर्ड के अनुसार, लार्वा कई दिनों तक अपने तीखे मुंह वाले हुक से ऊतक को खाते रहते हैं, जिसके बाद वे जानवर से गिरकर जमीन में धंस जाते हैं और बाद में पूरी तरह से विकसित वयस्क मक्खियों के रूप में बाहर निकलते हैं।

स्क्रूवर्म के खतरे जानें

न्यू वर्ल्ड स्क्रूवर्म, कोक्लिओमिया होमिनिवोरैक्स नामक एक धात्विक नीली ब्लो फ्लाई प्रजाति के परजीवी लार्वा हैं। टेक्सास एंड एम विश्वविद्यालय में कीट विज्ञान विभाग के प्रोफेसर और प्रमुख डॉ फिलिप कॉफमैन ने बताया कि पश्चिमी गोलार्ध में पाई जाने वाली अन्य सभी ब्लो फ्लाई के विपरीत, न्यू वर्ल्ड स्क्रूवर्म मृत जानवरों के बजाय जीवित जानवरों का मांस खाता है। मांस खाने वाले ये कीड़े घोड़ों और गायों सहित अधिकांश गर्म रक्त वाले जानवरों को अपना शिकार बनाते हैं। कॉफमैन ने बताया कि ये कीड़े घरेलू पालतू जानवरों और यहां तक कि दुर्लभ मामलों में मनुष्यों को भी संक्रमित करते पाए गए हैं।

रोचक खबरें

जानलेवा हुआ एआई? अपनी जिंदगी बर्बाद करने वाले सवाल पूछ रहे हैं लोग

लंदन। आज के इस आधुनिक और डिजिटल दौर में हम किसी भी सवाल का जवाब कुछ ही सेकंड में पा लेते हैं। मिसाल के तौर पर जब हम किसी लफ्ज का मतलब क्या है, या किसी नए देश में सबसे सस्ता सफर कैसे करें। ये पूछते हैं तो हमें फटाफट और तफसील से जवाब मिल जाता है। चैटजीपीटी, जेमिनी जैसे एआई चैटबॉट्स आज हर तरह की जानकारी का आसान जरिया बन चुके हैं। चाहे बात साधारण सवालों की हो या फिर जटिल मुद्दों की, ये कुछ सेकंड में सभी सवाल के जवाब आसानी दे देते हैं। इन एआई सॉफ्टवेयर्स ने हमारी जिंदगी को पहले से कहीं ज़्यादा तेज़ और आसान बना दिया है। चैटजीपीटी के मुताबिक, 2025 में इसके मासिक यूजर्स 180 मिलियन तक पहुंच जाएंगे. जहां एक तरफ ये एआई टूल्स स्कूल प्रोजेक्ट्स, निबंधों और जनरल नॉलेज में मदद कर रहे हैं। जैसे कि किसी पुराने इतिहास पर 2000 शब्दों का निबंध को आसानी से लिख देना. वहीं दूसरी तरफ, इसका एक गंभीर और चिंताजनक पहलू भी सामने आ रहा है। आज की युवा पीढ़ी, खासकर जेनजेड अब इन एआई चैटबॉट्स का इस्तेमाल सिर्फ जानकारी पाने के लिए ही नहीं, बल्कि जिंदगी और मेंटल हेल्थ से जुड़ी सलाह लेने के लिए भी करने लगे हैं। चाहे रिलेशनशिप की परेशानी हो, अकेलापन, स्ट्रेस या खुद पर शक जैसी चीज़ें। युवा अब इन चैटबॉट्स से जज्बाती और जाति सवाल पूछते हैं।

अंतरिक्ष में पहुंचने वाली पहली डॉगी की कहानी जिसने जान देकर रूस को दिलाई अमेरिका पर बढ़त

मास्को। मास्को अंतरिक्ष की यात्रा और एस्ट्रोनॉट से जुड़ी कई खबरें हमें हालिया महीनों में सुनने को मिली है। हाल ही में शुभांशु शुक्ला स्पेस से लौटे हैं। उनसे पहले सुनीता विलियम्स के नौ महीने तक अंतरिक्ष में फंस जाने ने दुनियाभर में सुर्खियां बटोरी थीं। बीते 6-7 दशकों में कई देशों में स्पेस में प्रभाव बढ़ाने को लेकर मुकाबला रहा है। इस सबसे बीच आज अगर ये कहा जाए कि स्पेस में अमेरिका और रूस जैसे देश जब अपने शुरुआती मिशन लॉन्च कर रहे थे तो एक कुतिया अंतरिक्ष यात्री बनी थी और पूरे सोवियत की हीरो बन गई थी। ये करीब 68 साल पहले हुआ था और इस कुतिया का नाम लाइका था।

तीन वर्षीय लाइका को बैठाया था रॉकेट में

रूस ने 1957 में यानी 68 साल पहले करीब तीन वर्षीय लाइका को रॉकेट में बैठाया था। ऐसे में उसे रॉकेट डॉग भी कहा जाता है। मॉस्को की सड़कों पर घूमने वाली लाइका का असली नाम कुद्रजावका था, जिसका रूसी में मतलब घुंघराला होता है। हालांकि, स्पेस में जाने के बाद उसको दुनिया ने लाइका के नाम से जाना गया। आज भी स्पेस साइंस की दुनिया में लाइका को याद किया जाता है। रूस ने खासतौर से उसके अंतरिक्ष यान से काफी अहम डाटा हासिल किया था।

जल्दीबाजी में बनी योजना

स्पुतनिक-1 की कामयाबी के बाद उस वक्त के सोवियत पीएम निकिता ख्रुश्चेव ने अपने वैज्ञानिकों को कुत्ते को अंतरिक्षयान के साथ भेजने का निर्देश दिया था। इसके बाद 3 नवंबर 1957 को सोवियत संघ ने लाइका को स्पुतनिक-2 नाम के अंतरिक्षयान में भेजा। दरअसल, सोवियत इंजीनियरों ने स्पुतनिक-2 की योजना जल्दबाजी में बनाई थी, जिसमें कुत्ते के लिए कम्पार्टमेंट था। सोवियत वैज्ञानिकों ने अपने पीएम के हुक्म को मानते हुए इसके लिए लाइका को चुना और उसे स्पुतनिक-2 पर सवार कर दिया। लाइका को यान में बैठाते हुए वैज्ञानिकों को पता था कि वो इसे आखिरी बार जिंदा देख रहे हैं।

3 नवंबर 1957 को स्पुतनिक-2 अंतरिक्षयान में भेजा गया लाइका को

सोवियत में हीरो बन गई लाइका

सोवियत वैज्ञानिकों के दावों के उलट साल 2002 में एक रिपोर्ट में पता चला कि लाइका की अंतरिक्ष में पहुंचने के सात घंटे के भीतर ही घबराहट और गर्मी से मौत हो गई थी। सोवियत संघ के लिए स्पुतनिक-2 मिशन इंटरनेशनल स्तर पर बड़ी कामयाबी थी। मिशन के वैज्ञानिकों के साथ लाइका पूरे सोवियत में हीरो बन गई। इससे सोवियत संघ भी स्पेस रेस में अपने प्रतिद्वन्द्वी अमरीका से बहुत आगे निकल गया।

देशभर में लगाए गए स्टेचू

सोवियत वैज्ञानिकों ने कहा था कि लाइका के शरीर से उन्हें अगले 10 दिन तक काफी जरूरी डेटा मिला। सोवियत अधिकारियों ने कहा था कि लाइका की कुर्बानी ने उनके स्पेस टेक्नोलॉजी को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। लाइका रूस में इतनी मशहूर हूई कि उसके स्टेचू पूरे देश में लगाए गए। लाइका नाम से सिगरेट ब्रांड बाजार में आए। लाइका फर्स्ट डॉग इन स्पेस के नाम से जानी जाती है। 3 नवंबर 1957 को जब लाइका के शरीर पर आयोडीन का घोल लगाकर उसे अंतरिक्ष में भेजा गया तो एक बड़े वर्ग ने इसका विरोध किया था। सोवियत रूस और दुनिया के कई हिस्सों में इसे एक अमानवीय काम माना गया, जिसमें अपने वैज्ञानिक प्रयोग के लिए बेजुबान कुत्ते की 'बलि' दे दी गई।

शांत स्वभाव की वजह से चुना

लाइका को रूसी स्पेस वैज्ञानिकों ने मॉस्को की सड़क से उठाया था। उसे इसलिए चुना गया, क्योंकि वह छोटी, शांत और कठिन परिस्थितियों में रही थी। 3 नवंबर, 1957 को लाइका को स्पुतनिक-2 से लॉन्च किया गया। इस कैप्सूल में खाना, पानी और गद्देदार दीवारें थीं। लेकिन, इसकी वापसी की कोई योजना नहीं थी। लाइका को वापस लाने की बात कभी नहीं हुई। ऐसे में लॉन्च के साथ ही लाइका इतिहास बन गई। लाइका पर कई दावे हैं। कुछ लोग कहते हैं कि वह सात घंटे जिंदा रही थी। कुछ एक्सपर्ट उसके सात दिन जिंदा रहने का दावा करते हैं। हालांकि, वह तस्वीरें आज भी दुनिया को भावुक करती हैं, जब वह कैप्सूल लॉन्च से पहले खामोशी से बैठी थी। फिर धीरे-धीरे वह धरती उसकी पहुंच से बाहर होती गई। अनजाने में लाइका ने अपनी जान देकर विज्ञान और अंतरिक्ष दौड़ एक ऐसी भूमिका निभाई, जिसने उसे अमर कर दिया।

लाइका की वन-वे उड़ान

लंदन के साइंस म्यूजियम के डग मिलार्ड ने साल 2017 में एक बातचीत में कहा था कि लाइका के लिए अंतरिक्ष की उड़ान वन-वे थी। यानी एक बार उसके यान के लॉन्च के बाद वापसी की कोई संभावना नहीं बचती थी। स्पुतनिक-2 अंतरिक्ष में पहुंचा तो सोवियत संघ ने दुनिया के सामने इसे एक बड़ी कामयाबी बताया। सोवियत ने कहा कि लाइका ने अंतरिक्ष में एक हफ्ता मजे में बिताया।

सांप ने महिला को तीन साल में सात बार काटा, फिर भी है जिंदा

बांदा। उत्तर प्रदेश के बांदा जिले से एक बेहद हैरान करने वाली खबर सामने आई है। यहां पर एक महिला को बीते तीन साल में सात बार सांप ने काटा है। महिला को हर बार जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया और हर बार वह ठीक हो गई। बांदा जिले के कोरही गांव में यह घटना हुई है। 36 वर्षीय महिला का रोशनी है, जिसे सात बार सांप ने काटा है और हर बार वह बच गई है। जब वह नाली साफ कर रही थी तब यह घटना हुई। पड़ोस के एक युवक जुबैर ने उसे अस्पताल पहुंचाया, जब उसकी हालत बिगड़ने लगी। डॉक्टरों ने उसे एंटी-वेनम इंजेक्शन दिया और वह ठीक हो गई। परिजनों और गांववालों का कहना है कि सांप सिर्फ रोशनी को ही काट रहा है। उनका यह भी कहना है कि सांप को कई बार मंदिरों और देव स्थानों पर भी देखा गया है। डॉक्टरों ने कहा कि यह एक असामान्य घटना है और वे हैरान हैं कि कोई महिला सात बार सांप के काटने के बाद भी जीवित है। परिजनों का कहना है कि हर बार अलग-अलग जगहों पर सांप ने काटा है। कभी खेत में, कभी घर में, लेकिन हर बार समय पर इलाज होने की वजह से रोशनी की जान बच गई। अब गांव में इस घटना को लेकर अलग-अलग तरह की चर्चाएं शुरू हो गई हैं। यह सोशल मीडिया पर लोगों के बीच चर्चा का विषय बन गई है। लोगों का सवाल है कि आखिर एक महिला को बार-बार सांप क्यों काट रहा है? डॉक्टरों ने भी इसे एक असामान्य घटना बताया है। वह भी हैरान हैं कि सात बार सांप के काटने के बाद भी महिला कैसे जीवित है।

गंगा में तैरता मिला रहस्यमयी पत्थर लोगों ने बताया श्रीराम का चमत्कार

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में गाजीपुर के ददरी घाट, हनुमानगढ़ में एक चौंकाने वाली घटना ने सभी का ध्यान अपनी तरफ खींचा है। गंगा नदी में तैरता हुआ एक विशाल पत्थर मिला है। बताया जा रहा है कि इसका वजन ढाई से तीन क्विंटल है। स्थानीय मंदिर के पुजारी के मुताबिक, सुबह मंदिर पहुंचने पर भक्तों ने उन्हें बताया किया कि गंगा में एक विशाल पत्थर तैरता हुआ मिला है। भक्तों और स्थानीय लोगों ने मिलकर इस पत्थर को नदी के किनारे लाया। महंत रामाश्रय के मुताबिक, यह पत्थर त्रेतायुग से जुड़ा हो सकता है। रामायण में वर्णित है कि भगवान श्रीराम ने लंका पहुंचने के लिए रामसेतु का निर्माण ऐसे ही तैरते पत्थरों से किया था। धार्मिक मान्यता है कि भगवान राम की सेवा में लगे लोग प्रत्येक पत्थर पर उनका नाम अंकित करते थे। नल और नील को मिले आशीर्वाद की वजह से उनके द्वारा स्पर्श किया गया कोई भी पत्थर पानी में डूबता नहीं था। पत्थर के मिलने के बाद स्थानीय लोगों और भक्तों में उत्साह का माहौल है। लोग इसे भगवान श्रीराम के चमत्कार का प्रतीक मान रहे हैं। साथ ही इसकी पूजा-अर्चना शुरू कर दी है। भक्त इसे रामेश्वरम के उन पत्थरों से जोड़कर देख रहे हैं, जिनका उपयोग त्रेतायुग में रामसेतु निर्माण के लिए किया गया था। गंगा में तैरता पत्थर मिलने के बाद इस वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। इसमें लोगों को पत्थर की पूजा-अर्चना करते देख सकते हैं।

क्या शैतानी गुड़िया है लाबुबू डॉल? लोग क्यों कर रहे एनाबेल डॉल से तुलना

बीजिंग। आजकल सोशल मीडिया पर एक गुड़िया बहुत चर्चा में है, जिसका नाम है लाबुबू डॉल। यह डॉल दिखने में थोड़ी अलग और अजीब सी है। इसी वजह से कुछ लोग इसे देखकर डर गए और इसे 'शैतानी डॉल' कहने लगे। कुछ लोगों का यह भी दावा है कि यह डॉल एक प्राचीन राक्षस से जुड़ी हुई है और बच्चों के लिए खतरनाक हो सकती है।

लाबुबू डॉल है डरावनी?

इस डॉल को लेकर डर तब शुरू हुआ जब इंस्टाग्राम पर एक वीडियो वायरल हुआ। उस वीडियो में लाबुबू डॉल को एक डरावनी इमेज के पास दिखाया गया था। साथ ही वीडियो में मशहूर अमेरिकी कार्टून शो द सिम्पसन्स का एक सीन भी डाला गया था। उस सीन में एक महिला गलती से एक शैतानी गुड़िया खरीद लेती है और उसका बच्चा परेशान हो जाता है। इस वीडियो को देखकर लोगों ने मान लिया कि लाबुबू डॉल भी किसी बुरी ताकत से जुड़ी हुई है। देखते ही देखते यह सोच इंटरनेट पर फैल गई।

काफी जगह मशहूर है लाबुबू डॉल

इसके बाद साल 2019 में चीन की कंपनी पोप मार्ट ने इसे बाजार में उतारा। तब से यह डॉल दुनियाभर में काफी पसंद की जा रही है। कई देशों में लोग इसे एक कलेक्टिबल टॉय यानी सजाने और रखने वाली खास डॉल के रूप में खरीदते हैं। कुछ लोगों ने इसे डरावना साबित करने के लिए इसका नाम एक प्राचीन राक्षस पाजुजु से भी जोड़ दिया। पाजुजु को हॉलीवुड की हॉरर फिल्म द एक्सोरसिस्ट में भी दिखाया गया था। लेकिन, यह दावा पूरी तरह से गलत निकला। नतीजा यह है कि लाबुबू डॉल सिर्फ एक काल्पनिक खिलौना है, जिसे एक कलाकार ने बच्चों और खिलौना प्रेमियों के लिए बनाया है। इसमें कोई बुराई या डरावनी बात नहीं है। जो भी अफवाहें सोशल मीडिया पर फैली हैं, वे सिर्फ एक गलतफहमी और डर की वजह से हैं। सच तो यह है कि यह डॉल बिल्कुल भी शैतानी नहीं है, बल्कि एक प्यारा और अलग सा खिलौना है।

यह है पीछे की कहानी

लाबुबू डॉल को 2015 में एक कलाकार कासिंगलुंग ने बनाया था। यह डॉल एक कहानी द मॉन्स्टर्स का हिस्सा है। इस कहानी में लाबुबू को एक शरारती, नटखट, लेकिन अच्छे दिल वाली परी जैसी कैरेक्टर के रूप में दिखाया गया है। यह डॉल बच्चों और खिलौनों के शौकीनों के लिए बनाई गई थी।

75 साल पुराने पत्र ने खोला ऐसा रहस्य

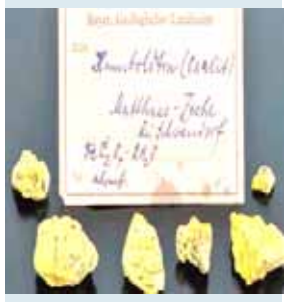

बर्लिन। कभी-कभी कुछ ऐसा होता है, जिससे पुराने रहस्य का खुलासा हो जाता है। अब एक ऐसी ही घटना सामने आई है, जिसके बारे में जानकर आपके लिए यकीन करना मुश्किल होगा। दरअसल, जर्मनी के बवेरिया में साल 2023 में सरकारी दस्तावेजों की डिजिटलीकरण प्रक्रिया के दौरान एक 75 साल पुराना पत्र मिला। साल 1949 में इस पत्र को लिखा गया था, जिसमें एक जूते के डिब्बे का जिक्र किया गया था। इसमें पीले रंग के चमकदार टुकड़े रखे थे। इस पत्र ने वैज्ञानिकों को हम्बोल्टाइन तक पहुंचा दिया। यह एक बेहद दुर्लभ खनिज है और दुनिया में अभी तक सिर्फ 30 जगहों पर मौजूद है।

हम्बोल्टाइन क्या है?

हम्बोल्टाइन एक ऑर्गेनिक मिनरल है। यह एक ऐसा है खनिज जिसमें कार्बन, हाइड्रोजन और ऑक्सीजन जैसे तत्व धातु के साथ क्रिस्टल संरचना में बंधे रहते हैं। इसकी रासायनिक संरचना में आयरन और ऑक्सालेट होता है। यह एक पीले रंग का नरम, रेजिन जैसे चमक वाला खनिज बनता है। प्राकृतिक रूप से यह खनिज तब बनता है, जब आयरन युक्त चट्टानों का कुछ खास एसिडिक वातावरण में नम स्थितियों में संपर्क होता है। इसकी बनावट को ही एक भूवैज्ञानिक चमत्कार माना जाता है। इस खोज के प्रमुख बवेरिया स्टेट ऑफिस फॉर द एनवायरनमेंट के वैज्ञानिक रोलैंड आइशहॉर्न हैं। उनकी टीम ने डिब्बे में रखे पीले टुकड़ों की पुष्टि की, तो यह साफ हो गया कि यह हम्बोल्टाइन है। इस खोज से जर्मनी में इस दुर्लभ खनिज का स्टॉक एक पल में दोगुना हो गया।

सावन में इस गांव की महिलाएं नहीं पहनती कपड़े

नई दिल्ली। भारत देश विविधताओं का देश है। यहां पर अलग-अलग राज्यों में कई तरह की मान्यताएं और कल्चर है। ऐसे में तीज-त्योहार के वक्त भी अलग-अलग इलाकों में इसे मनाने का अलग तरीका होता है। कुछ ऐसा ही सावन के पावन माह में भी होता है। दरअसल, देश का एक गांव ऐसा भी जहां महिलाएं बिना कपड़ों सावन महीने में रहती हैं। आप सोच रहे होंगे ये कैसे हो सकता है, लेकिन ऐसा होता है और इसके पीछे है एक खास मान्यता।

पहाड़ी राज्य हिमाचल में मान्यता

हिमाचल प्रदेश की मणिकर्ण घाटी में स्थित पीणी गांव अपनी अनोखी सांस्कृतिक परंपरा के लिए प्रसिद्ध है। यहां हर साल सावन के महीने में एक ऐसा अनूठा रिवाज निभाया जाता है, जिसे सुनकर लोग हैरान रह जाते हैं। इस परंपरा के तहत शादीशुदा महिलाएं पांच दिनों तक लगभग निर्वस्त्र रहती हैं। हालांकि, आधुनिक समय में अब महिलाएं शरीर पर एक पतला और महीन वस्त्र धारण कर लेती हैं, लेकिन परंपरा की मूल भावना अब भी बरकरार है।

पुरुषों पर भी है संयम का नियम

इस दौरान सिर्फ महिलाएं ही नहीं, पुरुषों पर भी सख्त नियम लागू होते हैं। उन्हें इन दिनों में मांसाहार और शराब का सेवन पूरी तरह से वर्जित होता है। गांववालों का मानना है कि अगर पुरुष या महिला, कोई भी इस नियम का उल्लंघन करता है तो देवता नाराज हो सकते हैं, जिससे पूरे गांव पर संकट आ सकता है।

वर्षों से चली आ रही परंपरा

लाहुआ घोंड देवता और परंपरा की उत्पत्ति

इस परंपरा की जड़ें एक पुरानी किंवदंती से जुड़ी हैं। कहा जाता है कि पीणी गांव में एक समय राक्षसों का आतंक हुआ करता था, जो गांव की सबसे सज्जित और सुंदर कपड़े पहनी महिलाओं को उठा ले जाते थे। तभी लाहुआ घोंड देवता गांव की रक्षा के लिए आए और राक्षसों का संहार कर दिया। तब से यह परंपरा चली आ रही है कि महिलाएं इन दिनों में सादे या न्यूनतम वस्त्र पहनकर अपने को साधारण बनाए रखें, ताकि कोई राक्षसी शक्ति आकर्षित न हो। यह परंपरा संरक्षण, संयम और श्रद्धा का प्रतीक मानी जाती है।

परंपरा की आस्था और मान्यता

इस प्रथा को लेकर गांव में गहरी धार्मिक मान्यता है। माना जाता है कि यदि कोई महिला इन पांच दिनों की परंपरा का पालन नहीं करती है, तो उसे जल्द ही कोई अशुभ समाचार मिलता है या उसके जीवन में कोई अनहोनी घट जाती है। यही वजह है कि महिलाएं इस परंपरा को बिना किसी झिझक के पूरी श्रद्धा और गंभीरता से निभाती हैं। इन पांच दिनों में पति-पत्नी एक-दूसरे से कोई बातचीत नहीं करते, न ही एक साथ समय बिताते हैं। सामाजिक रूप से भी वे एक-दूसरे से दूरी बनाए रखते हैं। यह मानसिक और भावनात्मक संयम की परीक्षा का समय होता है। जब दुनिया आधुनिकता की ओर बढ़ रही है, पीणी गांव जैसे स्थान हमें यह याद दिलाते हैं कि परंपराएं केवल रीति नहीं, बल्कि सामूहिक चेतना का हिस्सा होती हैं। यह रिवाज भले ही बाहरी लोगों को अजीब लगे, लेकिन गांव वालों के लिए यह आस्था और सांस्कृतिक पहचान का हिस्सा है, जिसे वे पूरी श्रद्धा से निभाते आ रहे हैं।